HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

मातृवन्दना

आषाढ़-श्रावण, युगाब्द 5121, जुलाई 2019

जम्मू-कश्मीर में लागू होगा परिसीमन ?

मूल्यः 20/- प्रति

अतंर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर ऐतिहासिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के निवास प्रीणी (मनाली) में योगाभ्यास करते स्थानीय प्रतिभागी

इतिहास संकलन समिति की तारा देवी शिमला में आयोजित बैठक में वार्षिक योजना पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ कार्यकर्तागण

शिमला पुस्तक मेला 2019 गेयटी थियेटर में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आयोजित कविता एवं चित्रकला प्रतियोगिता में मंच पर बैठे अतिथिगण

एसजेवीएन के सहयोग से हिमरश्मि स.वि.मं. विकासनगर में नवनिर्मित छात्रावास का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर व श्रीमती गीता कपूर निदेशक (का.) व अन्य

एडवांस स्टडी शिमला में विवेक अग्निहोत्री निर्देशित फिल्म 'ताशकंद फाईल्स' रिलीज के अवसर पर दीप प्रज्जवलन करते हुए प्रो. परांजपे, अभिनेत्री पल्लवी जोशी व अन्य

वर्ष: 19 अंक : 07 | आषाढ़-श्रावण, कलियुगाब्द 5121, जुलाई 2019

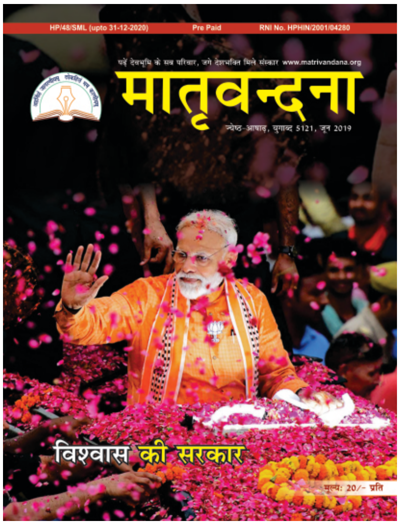

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com,
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

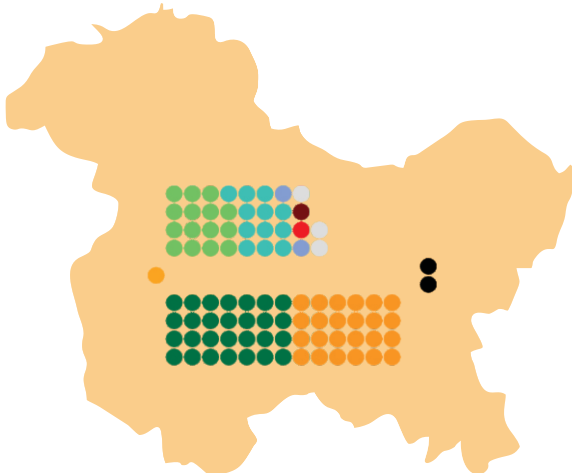

संपादकीय	देश की एकात्मकता के लिए	5
प्रेरक प्रसंग	समय सबका गुरू है	6
चिंतन	सुख-दु:ख कर्मों के फल	7
आवरण	जम्मू कश्मीर बैंक	8
संगठनम्	लघु उद्योग भारती की	12
देश-प्रदेश	एनसीसीई ने 41 महिला	14
देवभूमि	आस्था और श्रद्धा का प्रतीक	15
विविध	राइजिंग हिमाचल	16
युवापथ	योग में रोज़गार की	18
धर्म व अध्यात्म	गुरूकुल पद्धति एवं संस्कार	20
पर्यावरण	आदरणीय पर्वतजन	21
दृष्टि	कचरे से खुले सफलता के द्वार	22
काव्य जगत	नशा है एक बुराई	23
कृषि जगत	ऐसा करेंगे तो नहीं देना होगा	24
स्वास्थ्य	अनूठी-औषधीय वनस्पति एलोविरा	25
प्रतिक्रिया	असम में 50 लाख बंग्लादेशियों की	26
महिला जगत	महिला सशक्तिकरण में	27
पुण्य जयंती	आज़ाद ही जिएंगे ही मरेंगे	28
पुण्य स्मरण	मज़दूर नेता का अवसान	29
घूमती कलम	नई एजुकेशन पॉलिसी कमेटी	30
समसामयिकी	सीख लो कुछ चीन से	32
बाल जगत	एक बोध कथा	33

पाठकीय

महोदय,

बढ़ते सड़क हादसे पहाड़ी प्रदेश हिमाचल के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। मानवीय लापरवाही कहें या व्यवस्था का लचरपन आखिर कब तक निर्दोष लोगों की बलि दी जाती रहेगी। बंजार में हुए बस हादसे ने सबको झकझोर कर रख दिया है। यह हादसा दर्जनों परिवारों को न भरने वाले ज़ख्म दे गया है। हादसे के कारण तो जाँच रिपोर्ट से सामने आएँगे, लेकिन दोषियों को कड़ी सज़ा देकर प्रभावितों के ज़ख्मों पर मरहम लगाने काम हो सकता है। प्रदेश में जहाँ सड़कों का जाल तेज़ी से बिछाया जा रहा है, वहीं वाहनों की संख्या भी बढ़ी है। इसके साथ सड़क हादसों की आवृत्ति भी बढ़ी है। इन हादसों से सबक लेने की आवश्यकता है। बढ़ते सड़क हादसों को रोकने के लिए ठोस नीति बनानी ही चाहिए। वाहन चालकों को लाइसेंस देने, वाहनों की फिटनेस, सड़क सुरक्षा नियमों को सख्ती से लागू करने लिए कार्य योजना बनाई जानी चाहिए । सरकारी क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन तथा सड़कों में उच्च तकनीक के साथ अधिक निवेश पर बल देना चाहिए। कार्ययोजनाओं का समय -समय पर मूल्यांकन भी होना चाहिए। इन योजनाओं का क्रियान्वयन जनता की भागीदारी के बिना सफलतापूर्वक नहीं हो सकता। सड़क सुरक्षा को बनाई गई योजनाओं को बिना देरी किए धरातल पर उतारना समय की आवश्यकता है ताकि भविष्य में दिल दहलाने वाली घटनाओं से बचा जा सके और एक बेहतर व सुरक्षित हिमाचल का स्वरूप सामने आ सके। ◆◆◆ **जोगिन्द्र ठाकुर गाँव व डाकघर भल्याणी कुल्लू (हि. प्र.)**

महोदय,

प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में हमारे समाज ने रुपया-पैसा, सोना-चांदी, ज़मीन-जायदाद आदि संम्पत्ति को ही जीवन मान लिया है। लोगों के जीवन का लक्ष्य पैसा कमाना और उसका अधिक से अधिक संचय कर सुख व सुविधाओं का उपभोग करना ही रह गया है। जिसके चलते न तो किसी के पास समय है और न ही कोई खुश है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी वर्ष 2019 की वर्ल्ड हैप्पीनेस विश्व खुशहाली की रिपोर्ट में 156 देशों की सूची में हमारा देश भारत 140वें स्थान पर है। इस से पहले वर्ष 2018 में 133वें स्थान पर, वर्ष 2017 में 122वें तथा वर्ष 2016 में भारत 118वें स्थान पर रहा। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश माना गया है।

रिपोर्ट के अनुसार हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान 67वें और चीन 93वें स्थान पर है। इस रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में समग्र विश्व खुशहाली में हमारे देश में गिरावट आयी है। भारतीय समाज आज तनाव के दौर से गुजर रहा है। खुशहाली 'हैप्पीनेस' किसी भी देश के विकास के लिए अनिवार्य है, यह समाज की संपन्नता और समृद्धि को दर्शाता है। खुशी के बिना हर प्रकार का विकास अधूरा है। हमें अपनी परिस्थितियों को गंभीरता से देखने की जरूरत है। अपने ऊपर विश्वास करते हुए अपने निर्णयों के पुनरावलोकन की आवश्यकता है। हम परस्पर सहयोग, प्रेम व भाईचारे से ही इस विकराल होती परिस्थिति से निपट सकते है। ◆◆◆

महोदय,

हिमाचल प्रदेश सड़क दुर्घटनाओं के लिए दुनिया भर में बदनाम रहा है। सड़क हादसों में हिमाचल प्रदेश महाराष्ट्र के बाद दूसरे पायदान पर है। यहां हर साल करीब 4000 सड़क हादसों में 1500 मौतें, 10, 000 घायल तथा 3000 लोग हमेशा के लिए अपंग हो जाते हैं। ज्यादातर मौतें निजी बस हादसों से होती हैं तथा दूसरे नम्बर पर दोपहिया वाहनों से। सड़क दुर्घटनाओं की समस्या आज की नहीं दशकों पुरानी है। हैरानी की बात है कि आज तक इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं किये गए, कुछ प्रयास हुए भी तो आधो अधूरे। ओवरलोडिंग, ओवरस्पीड, सड़कों को दुर्दशा, चालक द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग करना, आउटडेटिड खटारा बसें, तकनीकी खराबी तथा अर्धप्रशिक्षित चालक ये सभी हादसों के मुख्य कारण हैं। पहाड़ी राज्य कह कर दुर्घटनाओं से पल्ला नही झाड़ा जा सकता। हिमाचल की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए यातायात सुरक्षित बनाना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। ◆◆◆ **कुलदीप कुमार, बंजार जिला प्रचार प्रमुख।**

जुलाई माह के शुभ मुहूर्त

6 जुलाई	प्रातः 7:23 से	नक्षत्र अश्लेषा
7 जुलाई	प्रातः 5:46 से	नक्षत्र रेवती
16 जुलाई	गुरू पूर्णिमा उत्सव	स्नान और दान का महत्व

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, **7650000990**
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गुरू पूर्णिमा उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (जुलाई)

हरिशयनी एकादशी	12 जुलाई
गुरू पूर्णिमा	16 जुलाई
चन्द्र शेखर आजाद जयंती	23 जुलाई
गुरू हरिकिशन जयंती	26 जुलाई
कामिका एकादशी	28 जुलाई

देश की एकात्मकता के लिए

जम्मू-कश्मीर का परिसीमन जरूरी

भारत एक अति प्राचीन देश है, जिसकी संस्कृति अविछिन्न रही है। इसने इतिहास के अनगिनत आरोह-अवरोह और सांस्कृतिक आक्रमणों के झंझावातों में भी अपना गौरव बनाये रखा। सहस्त्रों वर्षों से भारत अपनी वरेण्य अखण्डता की रक्षा करता आया है। भारत आज भी वैदिक संस्कृति का देश है। इसकी सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन शैली अधिकांशत सुरिक्षत है। आठवीं शताब्दी के बाद विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत की पवित्र धरा पर पाँव क्या रखे, हम शनै:-शनै: परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ते चले गये। वह समय भी आया जब मुगल यहाँ के शासक बन गये, हिन्दुओं को जबरन मुस्लिम धर्म को अपनाने के लिए बाध्य करने लगे, जिस कारण मुसलमानों की जनसंख्या में पर्याप्त वृद्धि होने लगी। मुगल शासकों के पतन के पश्चात अंग्रेज यहां आ धमके। इन विदेशी शासकों की कुटिलता से 1947 में देश का विभाजन हो गया । यह विभाजन वास्तव में धर्माधारित था। जिन्ना ने मुस्लमानों के लिए पृथक् देश की माँग की थी जिसे भविष्य की चिन्ता किये बिना तत्कालीन शीर्षनेतृत्व द्वारा स्वीकार कर लिया गया। पाकिस्तान नये मुस्लिम देश के रूप में उभर कर सामने आया। कश्मीर पर पाकिस्तन की काग-दृष्टि बनी हुई थी। उसने तत्काल कश्मीर को हस्तगत करने के लिये कब्बायिलियों के भेष में पाक सेना को भेजा किन्तु भारतीय सेना ने उन्हें खदेड़ दिया। किन्तु तत्कालीन काँग्रेस सरकार ने संघर्ष विराम कर मामला संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुंचा दिया जिसका दुष्परिणाम आज तक हम भोग रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि जम्मू कश्मीर भारत का अखंड हिस्सा है । मगर संविधान के अनुच्छेद 370 और 35 ए के कारण उसकी एकात्मक स्थिति संशयात्मक है। संसद सम्पूर्ण देश के लिये विधि निर्माण करने वाली संप्रभु संस्था है। लेकिन जम्मू-कश्मीर के लिए उसके अधिकार सीमित हैं। पाकिस्तान के साथ वार्ता प्रस्ताव कश्मीरी जनता में भ्रम पैदा करता रहा है। पाकिस्तन का प्रचार तंत्र, खुफिया संगठन, सेना और उसके द्वारा पोषित आतंकवादी इस भ्रम को और भी गहरा किये जा रहे हैं। आज कश्मीरी स्वंय को विवादित क्षेत्र के निवासी समझ रहे हैं। जम्मू कश्मीर भारतीय संस्कृति और दर्शन का प्रमुख केन्द्र रहा है। संस्कृत के काव्यशास्त्र का विकास यहीं हुआ। पिप्पलाद ऋषि के साथ उद्‌भट विद्वानों की चर्चा के बाद ही अमूल्य दार्शनिक ग्रन्थ प्रश्नोपनिषद् की रचना यहाँ हुई। आचार्य अभिनवगुप्त ने इसी दिव्य भूमि पर 'प्रत्याभिज्ञा दर्शन' को पुनर्जन्म दिया। सम्पूर्ण देश में कश्मीर व काशी के विद्वानों की प्रसिद्धि थी। उन्हीं विद्वानों के वंशज इस अपनी जन्मभूमि से निष्कासित किए जाते रहे, किसी ने आवाज तक उठाने की जहमत नहीं उठाई। इस लज्जाजनक स्थिति के पीछे यही धारा 370 काम कर रही है। जरा सोचिये, जम्मू कश्मीर राज्य के लाखों मतदाता ऐसे हैं जो लोकसभा के लिए तो वोट डाल सकते हैं किन्तु विधानसभा के लिए वे अयोग्य मतदाता हैं। देश की सभी विधानसभाओं का कार्यकाल 5 वर्ष है जबकि यहाँ की अवधि 6 वर्ष है। इस राज्य की महिला किसी अन्य राज्य के नागरिक से यदि विवाह करती है तो उसे राज्य की नागरिकता से बेदखल कर दिया जाता है साथ ही पैतृक सम्पत्ति से भी। किन्तु वह यदि पाकिस्तानी नागरिक से निकाह करती है तो अपने पाकिस्तानी पति को नागरिकता दिलाने का अधिकार रखती है।

जम्मू-कश्मीर राज्य में भयानक क्षेत्रीय असंतुलन बना हुआ है। कश्मीर में मतदाताओं की संख्या जम्मू क्षेत्र से अपेक्षाकृत कम है किन्तु वहाँ से तीन सांसद निर्वाचित होते हैं। और जम्मू से दो सांसद। उसी प्रकार कश्मीर घाटी में 46 विधायक चुने जाते हैं जबकि जम्मू से केवल 37 विधायक। क्षेत्रफल की दृष्टि से लद्दाख सबसे बड़ा क्षेत्र है, जहाँ से केवल 4 विधायक और एक सांसद का चयन होता है। हमेशा इस विषय पर चर्चा होती है किन्तु कोई ठोस कदम नहीं उठाया जाता। किन्तु इस बार प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने सत्ता में आते ही इस ओर अपना मंतव्य प्रकट किया है। गृहमंत्री अमित शाह ने सीटों के परिसीमन हेतु आयोग गठित कर दिया है। संभावना है कि शीघ्र ही न्यायपूर्ण निर्णय उभर कर सामने आयेगा और उसके पश्चात् अनुच्छेद 370 को निरस्त करने की ओर भी कदम बढ़ेंगे।

प्रेरक प्रसंग

गुरू शब्द का अर्थ है' गु-अंधकार। रू-प्रकाश अर्थात् जो अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश आपके जीवन में पैदा कर देता है। उन्हें जीव, गुरू मानकर चलते हैं। वैसे तो एकमात्र परमात्मा ही सबके गुरू हैं जैसे बिजली की धारा घर में बिछी सभी तारों में विद्यमान होते हुए भी लोग उस ओर प्रणाम करते हैं, जिस ओर वल्व का प्रकाश होता है। उसी तरह परमात्मा सर्वत्र व्याप्त होते हुए भी उनके ज्ञान का प्रकाश जिस माधयम के द्वारा प्रकट होता है-उन्हें लोग परमात्मा से भी ज्यादा आदर के योग्य मानकर सच्चा, रास्ता दिखाने वाले-सद्गुरू कहकर पुकारते हैं। यदि बिना गुरू के काम चल जाता तो किसी भी बच्चे को स्कूल में या घर में पढ़ाने की आवश्यकता न पड़ती। जब तक उसे कोई बताएगा नहीं कि इसे 'क' कहते हैं-इत्यादि। तो जीवन भर नहीं जान पाएगा और केवल जानवर की तरह खाना-पीना ही जीवन समझ बैठेगा। यदि आप किसी नए शहर में जाते हैं तो गाइड के बिना आपको घूमना मुश्किल होगा। किसी न किसी से कुछ न कुछ अवश्य ही पूछना पड़ेगा। जब भौतिक दृश्य जगत में सब देख सुनकर भी उसे समझाने के लिए गुरू की आवश्यकता होती है तो अदृश्य जगत में प्रवेश व वहां मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओं व अन्य अनुभूतियों के समाधान के लिए भी ऐसे गुरू की आवश्यकता होती है-जो उस मार्ग का ज्ञान रखते हों। अत: गुरू धारण करने के लिए सभी पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है। आध्यात्मिक उन्नति ब्रहम ज्ञानी गुरू के सानिध्य में रहते हुए भी मानसिक रूप से दूर रहने के कारण कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते। उन्हें केवल सानिध्य का अहंकार ही होता है। जिसके मन ने आंतरिक अनुभूति जन्य जगत में प्रवेश ही नहीं किया, वह किसी का मार्गदर्शन करने में बिलकुल असमर्थ होता है, चाहे उसने भले ही सारे वेद, पुराण, शास्त्र, गीता, रामायण कंठस्थ ही क्यों न कर लिए हों। वह एक टेप रिकार्डर से बढ़कर कुछ भी नहीं है। वह सभी शास्त्रों का पठन-पाठन करते हुए भी मन की शांन्ति के लिए चाय, सिगरेट आदि की शरण में जाता हुआ मिलेगा। जब तक मनुष्य गुरू की शरण में रहते हुए सभी अनुभूतियों की वैज्ञानिक व्याख्या जानते हुए समाधि तक न पहुंचे तब तक वह अधूरा ही रहता है और जो खुद संशययुक्त है, वह दूसरे का मार्गदर्शन क्या करेगा? ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की। उसे चलाने के लिए वेदों का ज्ञान आकाश में स्पंदित कर दिया। भगवान शंकर ने उस ज्ञान को मन से पकड़ने हेतु मन की एकाग्रता के लिए तंत्र के नाम से ध्यान की विधि बताई। अत: ब्रह्मा जी और भगवान शिव आदि गुरू कहलाए। भगवान वेद व्यास जी ने मंत्र द्रष्टा होकर इस ज्ञान को लेखनीबद्ध किया। उन्हीं के मार्ग पर चलकर ऋषि-मुनि, योगी और बड़े-बड़े ब्रह्मज्ञानी गुरू हुए। अत: अनादि काल से चला आ रहा वही दिव्यपथ आज भी सबका मार्ग दर्शन कर रहा है। इसलिए इस मार्ग में प्रवेश के लिए सर्वप्रथम गुरू अत्यंत आवश्यक हैं। ◆◆◆

आचार्य की श्रेष्ठता

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद अपने समय में भी अत्यंत विख्यात थे। किसान जब खेतों से फसल काट लेते, उसके बाद जो अन्न कण पड़े रह जाते थे, उन्हें ही एकत्र करके वे अपनी गुजर करते थे, इसी कारण उनका नाम 'कणाद' पड़ गया। देश के राजा को जब उनके इस कष्ट साध्य जीवन का पता चला तो उसने अपने मंत्री के हाथों प्रचुर धन-संपदा महर्षि के पास भेजी, लेकिन महर्षि ने उसे लौटा दिया। कहा, इस धन को तुम उन्हें बांट दो, जिनको इसकी जरूरत है। ऐसा तीन बार हुआ। राजा को समझ में नहीं आया कि जो व्यक्ति खेतों में गिरे हुए अनाज चुनकर अपना भरण-पोषण करता है, यदि उसे धन की जरूरत नहीं होगी तो और किसे होगी? अंतत: राजा स्वयं उनसे मिलने गए। साथ में बहुत सारा धन और जीवनोपयोगी साधन भी लेकर गए। महर्षि कणाद से उसे स्वीकार करने की प्रार्थना की। तब महर्षि ने समझाया, राजन् मैं एक आचार्य हूं। विद्या अर्जन और विद्या वितरण ही मेरा कर्तव्य है। इसके लिए मुझे साधनों की

बहुलता नहीं, साधना की सघनता चाहिए। अपनी साधना को सघन बनाने के लिए ही मैं सदा प्रयत्नशील रहता हूं। इसलिए अपने इन साधनों को उन्हें दे दो, जिनको साधनों की जरूरत है।' राजा को बात समझ में आ गई कि कणाद श्रेष्ठ आचार्य क्यों माने जाते हैं।

सुख-दु:ख कर्मों के फल

...✍ -डा. अतुल टण्डन

मानव जीवन की प्रत्येक घटना उसके कर्मों से ही नियंत्रित होती है। बृहदारण्यकोपनिषद् का मत है कि 'मनुष्य की जैसी इच्छा होती है वैसे ही उसके विचार बनते हैं। विचारों के अनुसार ही उसके कर्म होते हैं और कर्मानुसार ही उसे फल अवश्य चखना पड़ता है।'

'अवश्यमेवभोक्तव्यं कृताकर्म शुभाशुभम्।' इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। चाहे वह इस जन्म में हो या अन्य किसी जन्म में हमारे जीवन के सुख-दु:ख हमारे कर्मों के फल हैं। जन्म- जन्मांतरों में किए गए कर्म हमें भोगने ही पड़ेंगे। भोगे बिना कर्म नष्ट नहीं होते- 'नाभुक्तं क्षीयते कर्म' आध्यात्मिक दृष्टि से इस नाम-रूपात्मक परम्परा को ही जन्म-मरण का चक्र अथवा 'संसार चक्र' कहते हैं। इस नाम-रूपों की आधारभूत शक्ति को समष्टि रूप से 'ब्रह्म' अथवा 'परमात्मा' और व्यक्तिरूप से 'जीवात्मा' अथवा 'देही' कहा जाता है। वस्तुत: यह आत्मा अविनाशी होने का कारण अजर-अमर है परन्तु कर्म बंधन में पड़ जाने पर एक नाम रूप के नष्ट हो जाने पर उस जीवात्मा का दूसरे नाम रूपों में प्रकट हो जाना अवश्यंभावी हो जाता है। आज का कर्म फल कल और कल का परसों भोगना पड़ेगा। इसी प्रकार आसक्त होकर जो कुछ भी किया जाता है, उसका फल यदि इस जन्म में न मिले तो अगले जन्म में अथवा आगामी जन्मों में भोगना पड़ेगा। महाभारत और मनुस्मृति में तो यहां तक कहा गया है कि हमारे किए गए कर्मों का फल हमारे साथ-साथ हमारी संतान को भोगना पड़ता है। महाभारत में भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं, 'यदि कभी यह दिखाई पड़े कि किसी मनुष्य को उसके पाप-कर्मों का फल नहीं मिलता है तो यह समझ लेना चाहिए कि फल उसके वंशजों को भोगना पड़ेगा। कठोपनिषद् कहता है, 'मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा अपने संचित कर्मों के अनुरूप योनि प्राप्त करती है। महर्षि पंतजलि ने अपने योग दर्शन में कर्मों को ही जन्मों का कारण माना है। गोस्वामी तुलसीदास कर्मों की महिमा का बखान करते हुए श्री रामचरितमानस में लिखते हैं-'करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।' मानस के उत्तरकाण्ड में वे कहते हैं 'बड़े भाग मनुष्य तनु पावा।। सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा।। साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।। पाइ न जेहिं परलोक संवारा।। सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि-धुनि पछिताइ। कालहि कर्महिं ईश्वरहिं मिथ्या दोस लगाइ।।' मनुष्य पाप-कर्म हंसते हुए करता है किन्तु रोते हुए उसका फल भोगना पड़ता है। अतएव मानव को अधर्म और पाप के भावी दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर मोक्ष-प्राप्ति के उद्देश्य से ही सारे कर्म करने चाहिए।

जीव की मरणोत्तर स्थिति अथवा गति उसके संचित कर्मों से ही निर्धारित होती है। जैसे जीव के इहलौकिक सुख-दुख उसके कर्मों के फलस्वरूप होते हैं, वैसे ही देह त्यागने के उपरान्त परलोक में उसकी अच्छी या बुरी स्थिति उसके कर्मों पर ही अवलम्बित होती है। कर्म फल भोगे बिना उससे छुटकारा नहीं मिलता। देह की उत्पति और उसमें आत्मा का संयोग कर्मानुसार ही होता है। बौद्ध ग्रन्थ 'धम्मपद' धर्मपद में भगवान बुद्ध का वचन है कि पापी मनुष्य इस लोक और परलोक, दोनों में दुख उठाता है। अच्छा व्यक्ति इस संसार में और परलोक में भी प्रसन्न रहता है। उसे दोनों लोकों में सुख मिलता है। संपूर्ण विश्व में ऐसी कोई जगह

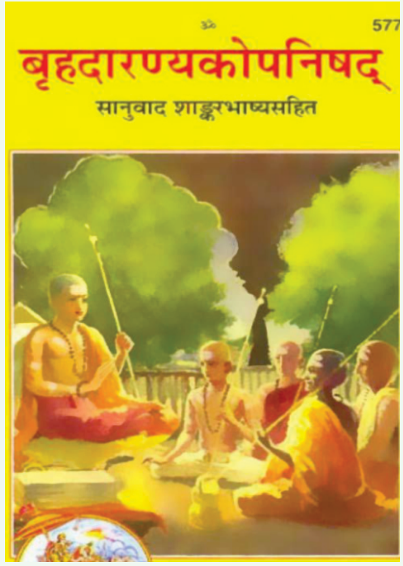

नहीं है, जहां मनुष्य बुरे कर्मों के फल से बच सकता है। जैनाचार्य समंत भद्रस्वामी कहते हैं कि 'धर्म के प्रताप से कुत्ता भी देवयोनि पाकर देव हो जाता है पाप के फल से देव भी कुत्ते की योनि में चला जाता है, इसलिए प्राणियों के लिए धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई संपदा अभीष्ट नहीं है।'

कर्मफल की ईश्वरीय व्यवस्था पूर्णत: न्यायोचित है। वेदों का भी कहना है कि हम जैसे कर्म करते हैं, वैसे ही संस्कार बनते हैं और उन्हीं संस्कारों के अनुसार हमें आगामी जन्म मिलता है। मनुष्य को सदा पापों से बचना चाहिए। पाप तीन तरह से होते हैं- 'कृत' स्वयं, 'कारित' दूसरे के द्वारा और 'अनुमोदित' कोई दूसरा पाप करता हो तो उसका साथ देना। इन तीनों प्रकार के पाप-कर्म से बचने पर ही कल्याण संभव है। मनुष्य योनि को ऋषि-मुनियों ने मोक्ष का द्वार कहा है। जीव के आवागमन से छूटने का एक ही मार्ग है-सांसारिक विषय-वासनाओं से विरक्त होकर शुभ कर्मों को निष्काम भाव से करना। सत्कर्मों के द्वारा भव-बंधन से मुक्ति ही मानव का मुख्य ध्येय होना चाहिए तभी जीवात्मा जन्म-जन्मांतर की यात्रा से विश्राम प्राप्त करके परमात्मा में लीन हो सकती है। ◆◆◆

जम्मू कश्मीर बैंक के दस्तावेजों की जांच जारी।

... -रोहन कुमार

मोदी सरकार का कार्यकाल आरंभ होते ही व अमित शाह के गृहमंत्री बनते ही देश में सफाई अभियान चालू हो गया है, सबसे पहले अमित शाह की दृष्टि पड़ी है जम्मू-कश्मीर में भ्रष्टाचार, आतंकियों की फंडिंग व हवाला करोबार का केंद्र बिंदु बन चुके जम्मू कश्मीर बैंक और उसके अधिकारियों पर, जिनपर अब कड़ी कार्रवाई शुरू हो चुकी है।

एक ओर जहां बैंक के चेयरमैन और बोर्ड डायरेक्टर परवेज़ अहमद को पद से हटाकर आर के छिब्बर को नया चेयरमैन और बोर्ड डायरेक्टर नियुक्त किया गया, वहीं दूसरी ओर परवेज़ को पद से हटाए जाने के ठीक बाद एंटी करप्शन ब्यूरो ने जे.के. बैंक के हेडक्वार्टर पर छापेमारी की। परवेज अहमद को हटाने के ठीक बाद स्टेट विजिलेंस टीम ने जे.के. बैंक के श्रीनगर स्थित हेडक्वार्टर पर छापेमारी शुरू की है जो अभी भी जारी है, और इस समय बैंक के दस्तावेजों रिकाड्र्स की गहन छानबीन की जा रही है, इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार और भर्तियों में धांधली के आरोप में पूर्व चेयरमैन परवेज़ अहमद को गिरफ्तार भी किया जा सकता है। नवनियुक्त जम्मू कश्मीर बैंक के चेयरमैन आर के छिब्बर 1947 के बाद जम्मू एंड कश्मीर बैंक के पहले गैर कश्मीरी गैर मुस्लिम चेयरमैन हैं और आज हुई इस अप्रत्याशित कार्यवाही का उद्देश्य भी जम्मू कश्मीर बैंक में गहरी जड़ें जमा कर बैठे अलगाववादी समर्थकों के वर्चस्व को तोड़ना ही है। जम्मू एंड कश्मीर बैंक और उसके वरिष्ठ अधिकारियों पर हवाला ट्रांजैक्शन, जेहादी आतंकवादियों की सहायता व् कश्मीर में आतंकवाद फैलाने में सहयोग करने, कर्मचारियों की भर्ती में धांधली जैसे कई गम्भीर आरोप हैं, परंतु आज तक, कभी भी, किसी भी सरकार के शासन में इन आरोपों पर कोई जांच नहीं हुई। वर्ष 2018 में इस बैंक में क्लर्क भर्ती में कश्मीर घाटी के शांतिदूत अभ्यर्थियों को, जम्मू क्षेत्र के हिन्दू अभ्र्याथयों के मुकाबले कम अंक आने के बावजूद प्राथमिकता दी गई थी, जिसके उपरांत जब जम्मू के अभ्यर्थियों ने विरोध किया व् प्रश्न खड़े किये तो मामले को दबाने हेतु परीक्षा पास न करने वाले कश्मीरी शांतिदूत अभ्यर्थियों को निकाले बिना, जम्मू के अभ्यर्थियों को भर्ती कर लिया गया।

जम्मू कश्मीर बैंक में घाटी के अलगाववादी समर्थकों का आधिपत्य आप इसी बात से समझ लीजिए कि कहने को तो जम्मू कश्मीर बैंक एक सार्वजनिक बैंक है, परंतु बैंक में चल रहे गोरखधंधे व काले कारनामे बाहर ना जाएं इसीलिए बैंक को आरटीआई के दायरे तक से बाहर रखा गया है, सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक होने के कारण यह निरंतर सरकार से वित्तीय सहायता तो लेता रहा है परंतु पारदर्शिता व उत्तरदायित्व की बात करें तो यह कभी भी सरकार के प्रति जवाबदेह नहीं रहा। जम्मू कश्मीर बैंक द्वारा KYC योर कस्टमर के नियमों को फॉलो नहीं करने के कारण RBI द्वारा इन पर करोड़ का फाइन भी लगाया जा चुका है इसके अतिरिक्त इस बैंक के NPA एसेट्स भी सुरसा के मुंह समान निरंतर बढ़ते ही जा रहे हैं। इस बैंक के इतिहास और स्थापना की बात करें तो 1938 में महाराजा हरि सिंह ने इसे स्थापित किया था, जम्मू कश्मीर का भारत में विलय होने के पश्चात् यह राज्य सरकार के अधीन आ गया, और उसके बाद से ही यह अलगाववादी समर्थकों, हवाला करोबार, भर्तियों में धांधली व् पैसों के अवैध लेन-देन का अड्डा बन गया, जिसमें तबसे लेकर आजतक कश्मीर घाटी के अलगाववादी समर्थकों का ही कब्जा रहा।

आपको यह जानकर अचरज होगा कि पिछले वर्ष जब इस बैंक के 80 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया गया तो उस पूरे कार्यक्रम में कहीं भी बैंक के संस्थापक महाराजा हरि सिंह की तस्वीर और उनके नाम का नामोनिशान तक नहीं था, स्थिति यह है कि बैंक की अधिकारिक वेबसाइट पर भी बैंक के संस्थापक का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। परंतु अब हुई इस कार्यवाही से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में इस प्रकार के गोरखधंधों में लिप्त संस्थानों पर मोदी नीत भाजपा सरकार कठोर कार्यवाही कर देश विरोधियों के हौसले, उनके एजेंडे और उनकी कमर तोड़ने का काम पूरे समर्पण व लगन के साथ करने का मन बनाकर बैठी है। ◆◆◆

राष्ट्र हित के लिए मदरसों का नियमन होना जरूरी है

... -राजेश वर्मा

केंद्र सरकार द्वारा मदरसों को औपचारिक और मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने का निर्णय न केवल मुसलमानों के सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होगा बल्कि देश की उन्नति के लिए भी एक अहम फैसला होगा। देशभर में मदरसे बड़ी संख्या में मौजूद हैं आज तक मदरसों को मजहबी केंद्रों के रूप में जाना जाता रहा है। जहां अन्य धर्मों के बच्चों को विद्यालयों में पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा दी जाती है वही मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों को छोटी आयु में ही इस्लाम की शिक्षा दी जा रही है। एक छोटे बच्चे को अपने धर्म या मजहब से जोड़ना बुरी बात नहीं है लेकिन शिक्षा ऐसी हो जो छोटी आयु में ही उनके सर्वांगीण विकास पर केंद्रित हो, समयानुसार हो। सरकार द्वारा इन मदरसों में तालीम हासिल करने वाले बच्चों को विज्ञान, कम्प्यूटर व आधुनिक विषयों की शिक्षा से जोड़ने के फैसले के दूरगामी परिणाम होंगे।

आखिर मदरसों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ना क्यों जरूरी है? इसके पीछे बहुत से कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा कारण है जब किसी भी आंतकी हमले में संलिप्त आंतकियों के इन मदरसों से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष संबंध सामने आते हैं तो इनमें मिलने वाली शिक्षा पर जरूर सवालिया निशान खड़ा होता है, तब यह तालीवानी मानसिकता व जहर से भरी शिक्षा नजर आती है। इन्हें मजहब के नाम पर मरने मारने पर कुर्बानी जैसे अंलकारों से सुशोभित किया जाता है, इस रास्ते पर धकेलने वाले इनके आकाओं का एक ही मकसद होता है और वह है मजहब के नाम पर कट्टरपंथी सोच से आतंकी मानसिकता पैदा करना, जितने आत्मघाती हमलावर मरेंगे उतना ही यह अन्य युवाओं की मानसिकता को जहरीला बनाने में कामयाब होंगे। 1 मरेगा ये 10 के मन में इस्लाम के नाम पर समाज के प्रति नफरत पैदा करेंगे। श्रीलंका में हुए हमले भी इसी जहरीली मजहबी मानसिकता का उदाहरण था। आखिर यह तालीम इनको मिलती कहां से है? मदरसों का अर्थ है धार्मिक शिक्षा के वह केंद्र जिसमें पढ़ने या आने वालों को मजहब से रुबरु करवाना इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना लेकिन वर्तमान में इन पर आंतक की फैक्ट्रियों का तगमा क्यों लगता जा रहा है? वजह साफ है पहली बात बहुत से मदरसे बिना किसी सरकारी नियंत्रण व नियम के चल रहे हैं।

मदरसों को बंद करने की बजाए इनका आधुनिकीकरण करने की पहल होनी चाहिए। देश में सांप्रदायिकता व तुष्टिकरण की राजनीति को खत्म कर के एक स्वस्थ समावेशी विकास का माहौल बनाने की जरूरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मदरसों में समय के साथ शिक्षा की पहल सराहनीय है। वोट बैंक की राजनीति में हो सकता है कुछ राजनैतिक दल इस मुद्दे पर भी हिंदू-मुस्लिम से जोड़ने की कोशिश करें लेकिन मुस्लिम युवक व युवतियों को भी हक है आधुनिक समाज का हिस्सा बनने का उनका भी मौलिक अधिकार है जैसे अन्य धर्म व समुदायों के बच्चे शिक्षा लेते हैं वह भी उसी धारा से जुड़ें। इतना ही नहीं मदरसा शिक्षकों को भी विभिन्न संस्थानों द्वारा हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और कंप्यूटर जैसे विषयों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे आगे मदरसा छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा प्रदान कर सकें। मदरसों को या तो सीबीएसई या फिर राज्य शिक्षा बोर्ड से संबद्ध करना बेहद जरूरी है। सभी जानते हैं कि मदरसों में मिलने वाली शिक्षा पर आतंक के लिए प्रेरित करने वाली शिक्षा के जो आरोप लगते हैं उनमें कहीं न कहीं सच्चाई जरूर होती है। देश व समाज को ऐसी शिक्षा से बचाना बेहद जरूरी है इन सबके बावजूद कोई मदरसा या वर्ग इस चीज़ से आनाकानी करे उसे राष्ट्रहित के लिए बंद करना ही बेहतर होगा। ◆◆◆

चुनाव-सुधार: निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन

... - डॉ॰ उमेश कुमार पाठक

चुनाव (परिसीमन) आधुनिक लोकतंत्र का सर्वाधिक तथ्य आधारित आयाम तो है ही, साथ ही साथ इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की रूचि व हितों का व्यवस्थापन सहज ही परिचालित होता है। आखिर संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था का नियामक जो यह ठहरा। चुनाव परिसीमन लोकतांत्रिक ढाँचे का एक जीवंत सदंर्भ है जहाँ राजनीति कालचक्र का सभी पक्ष (भूत, वर्तमान और भविष्य) समाहित होता है । इतना ही नहीं, यह राजनीतिक चुनाव प्रक्रिया के अंतर संबंधों की मूल चेतना है।

भारतीय समेकित संस्कृति संपन्न बहुलवादी समाज में लोकतांत्रित जीवन मूल्यों के निहितार्थ चुनाव परिसीमन की उपादेयता और बढ़ जाती है। तभी हाल ही में हमारे माननीय गृहमंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के लिए परिसीमन आयोग के गठन का संकल्प अभिव्यक्त किया है जिसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव सहज ही परिलक्षित होता है। इसमें दर्शन, विचार और राष्ट्रधर्म की मौलिक संकल्पना ही अभिप्रेरणा है। विवेचनार्थ, चुनाव परिसीमन लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया का मूलाधार है जिसका संबंध कहीं न कहीं राज्य के सिद्धान्त, संगठन, शासन और व्यवहार में भी है। इसके अंतर्गत राज्य व राजनीतिक जीवन के स्वरूप, राजनीतिक दायित्व के आधार तथा चुनावी प्रक्रिया की राजनीतिक सामाजिक नैतिक गुणवत्ता जाँच की जाती है। लोकतांत्रिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु क्षेत्रों का जनांकिय कसौटी पर परिसीमन के उदात्त एवं जटिल कार्य निष्पादित किए जाते हैं। निश्चयत: विभिन्न क्षेत्रों का भारत की लोकतांत्रिक मांग के अनुसार अलग-अलग विशेष अध्ययन कर उनका विकास अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। भारतीय विधायिका में सभी क्षेत्रों का समुचित प्रतिनिधित्व चुनाव -परिसीमन द्वारा ठोस एवं अद्यतन किया जा सकता है। चुनाव परिसीमन का दृष्टिकोण जनसंख्या और क्षेत्र विशेष को साध्य मानता है, अर्थात् जो भी मूल्य व मान्यताएं वैधानिक सीटों के आवंटन हेतु निर्धारित की जाएंगी, व्यक्ति व क्षेत्र को केन्द्र में रखकर की जाएंगी। क्षेत्र व नागरिक का हित साधन करना लोकतांत्रिक समाज का परम उद्देश्य है। इसके आलोक को व्यवस्थित करने का जरिया चुनाव परिसीमन ही है। भारतीय लोकतंत्र में विधायिका के सीटों का निर्धारण व पुन: प्रभावित किया है। क्योंकि परिसीमन की आवश्यकता वैधानिक करने हेतु है जो अध्ययन में सूक्ष्मता और परिशुद्धता लाता है। विवेचनार्थ, यह परिसीमन समाजमितीय विधियों से हो सकता है।

चुनाव परिसीमन विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार द्वारा परिसीमन का कार्य अत्यंत ही व्यवस्थित तरीके से किया जाना चाहिए। महत्त्वपूर्ण एवं निरंतर चलने वाली पहचान योग्य किसी भी प्रक्रिया को व्यवस्था कहा जाता है, उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। और यह मूर्त या अमूर्त्त, आनुभविक अथवा परानुभविक, वैचारिक या प्रेक्षणीय हो सकता है। यदि शरीर में रक्त व्यवस्था या राज्य में शासन व्यवस्था मूर्त्त, आनुभविक और प्रेक्षणीय है तो समाज में व्याप्त नैतिक व्यवस्था अमूर्त्त, परानुभविक एवं वैचारिक है, जबकि कुछ व्यवस्थाओं का स्वरूप मिश्रित अथवा अर्द्धमूर्त्त और अर्द्धअमूर्त्त हो सकता है, जैसे चुनाव परिसीमन का कार्य।

व्यवहार एवं प्रभाव की दृष्टि से चुनाव परिसीमन राजनीतिक चुनाव प्रणाली व्यवस्था के रूप में है, अंदर से परिचालन निर्देशित है तथा जब वह लोकतांत्रिक मूल्यों का बाह्यकारी विनिधान करती है तब राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति अनुक्रिया करती

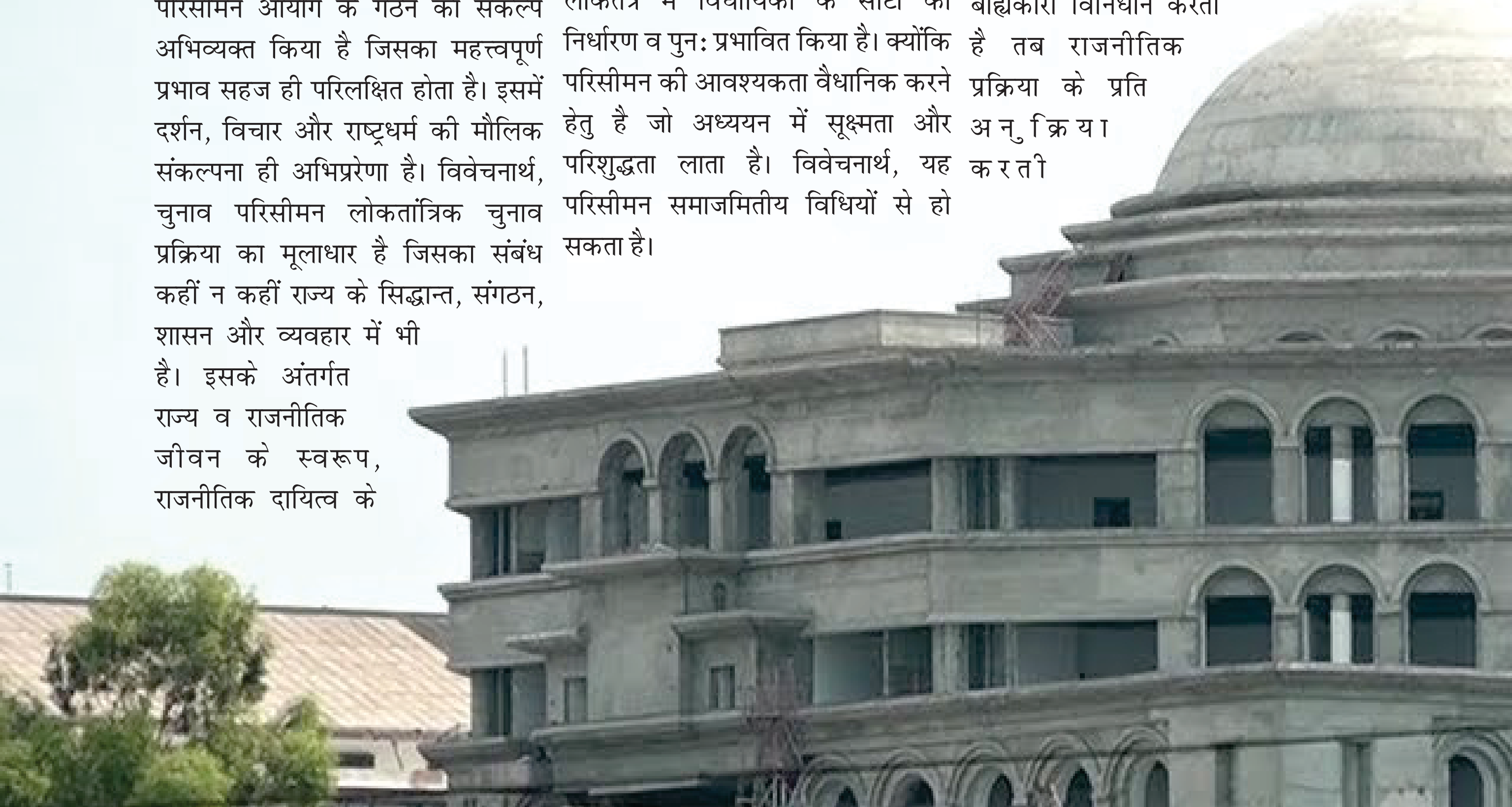

है। उल्लेखनीय है कि लोकतांत्रिक प्रणाली में कई अन्य व्यवस्थायें भी समानांतर चलती रहती हैं, लेकिन, चुनाव परिसीमन कार्य व्यवस्था अपने बाह्यकारी साधिकार विनिश्चिय-निर्माण के कारण अन्य सभी को अनुकलित कर विशिष्टि प्रकृति की व्यवस्था के रूप में दृष्टिगत होती है। साथ ही साथ यह राजनीतिक व्यवस्थाओं तथा अन्य व्यवस्थाओं से प्रभाव या निवेश ग्रहण करती है तथा उनको परिवर्तित करके निर्गतों में बदल देती है।

भारत की अखंडता एवं एकता को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकीकरण अति आवश्यक है । इस परिप्रेक्ष्य में चुनाव परीसीमन का महत्त्व एवं उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। जम्मू कश्मीर भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भारत का अभिन्न राज्य है। यह आजादी के समय से ही आतंकवादी व विघटनकारी गतिविधियों का शिकार रहा है । दरअसल सवैधानिक अनुच्छेद 370 का विशेष प्रावधान तथा सशक्त राजनीतिक नेतृत्व का अभाव जम्मू कश्मीर को भारत की मुख्यधारा से सदैव वंचित किये हुए है । उल्लेखनीय है कि वर्तमान केन्द्र सरकार ने अपनी राष्ट्रीय संकल्पना को साकार करने के निहितार्थ जम्मू कश्मीर के संबंध में नीति और नीयत को स्पष्ट कर सशक्त एवं ठोस जानीतिक नेतृत्च का परिचय दिया है। नतीजतन जम्मू-कश्मीर, विशेषकर घाटी में आतंकवादी व विघटनकारी हौसले पस्त हुए हैं। आतंकवादी ठिकाने न्यून रह गए हैं। निःसंदेह भारत सरकार के प्रयास अद्भुत हैं, साहसिक हैं, सराहनीय हैं। और इसी कड़ी में अब गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा परिसीमन आयोग के गठन का प्रस्ताव एकीकरण की प्रक्रिया में अभूतपूर्व व साहसिक कदम है। क्योंकि, राष्ट्रीय एकता व अखंडता को बनाए रखने के लिए देश के राजनीतिक वातावरण में सुधार करना भी अत्यावश्यक है। देश के विभिन्न संप्रदायों, जतियों में एक-दूसरे के प्रति वांछित विश्वास का कहीं न कहीं अभाव है। इस अविश्वास की स्थिति में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की कल्पना भी नहीं की जा सकती । ध्यातव्य है कि आम चुनाव के लिए विधायी निर्वाचन क्षेत्र का परीसीमन आयोग द्वारा सुनिश्चित किया जाता है।

भारत के संवैधानिक अनुच्छेद 85 में यह प्रावधान है कि प्रत्येक जनगणना के उपरांत परिसीमन आयोग संसद के आदेशानुसार विभिन्न चुनाव क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व में आवश्यक परविर्तन करेगा । उल्लेखनीय है कि चुनाव क्षेत्रों का परिसीमन निर्वाचन आयोग की देख-रेख और संसद की अंतिम स्वीकृति के अधीन किया जाता है। हालांकि भारतीय संविधान के इस प्रावधान का नियमित अनुपालन सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। ऐसे में गृहमंत्री श्री अमित शाह का प्रयास उनकी राजनीतिक सहभागिता को संतुलित करने का साहसिक कदम भी है, विशेषकर जम्मू-कश्मीर के लिए। हमारे संविधान में वर्णित आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समानता, स्वतंत्रता और न्याय के उद्देश्यों की पूर्ति का तार्किक एवं सशक्त माध्यम है। चुनाव (क्षेत्रों का) परिसीमन। अस्तु राजनीतिक संवैधानिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में निर्वाचन प्रक्रिया को गतिशील बनाए रखने के लिए समय-समय पर निर्वाचन सुधार के निहितार्थ निर्वाचन क्षेत्रों पर परिसीमन अपरिहार्य हो जाता है।

सारांशत: भारतीय संविधान में इस बात की आवश्यकता तीव्रता से महसूस की गई है कि नवीन राजनीतिक सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए चुनाव क्षेत्रों का एक अवधि के उपरांत परिसीमन किया जाना चाहिए। जम्मू कश्मीर के चुनाव (क्षेत्रों का) परिसीमन आयोग का गठन होने से निर्वाचन क्षेत्रों में कई महत्त्वपूर्ण आयाम खुलेंगे। विशेषकर घाटी क्षेत्रों मे आरक्षित क्षेत्र की सीटों में इज़ाफा होगा तथा विधायिका में जनसंख्या व क्षेत्र के आधार पर सीटों की बढ़ोतरी अथवा बदलाव से जम्मू-कश्मीर में सकारात्मक राजनीतिक सहभागिता की आशा की जा सकती है । जम्मू कश्मीर में आतंकी व विघटनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगेगा और अंतत: लोगों की राजनीतिक सहभागिता लोकतंत्र के उदात्त लक्ष्यों की प्राप्ति में मील का पत्थर साबित होगी। !

◆◆◆

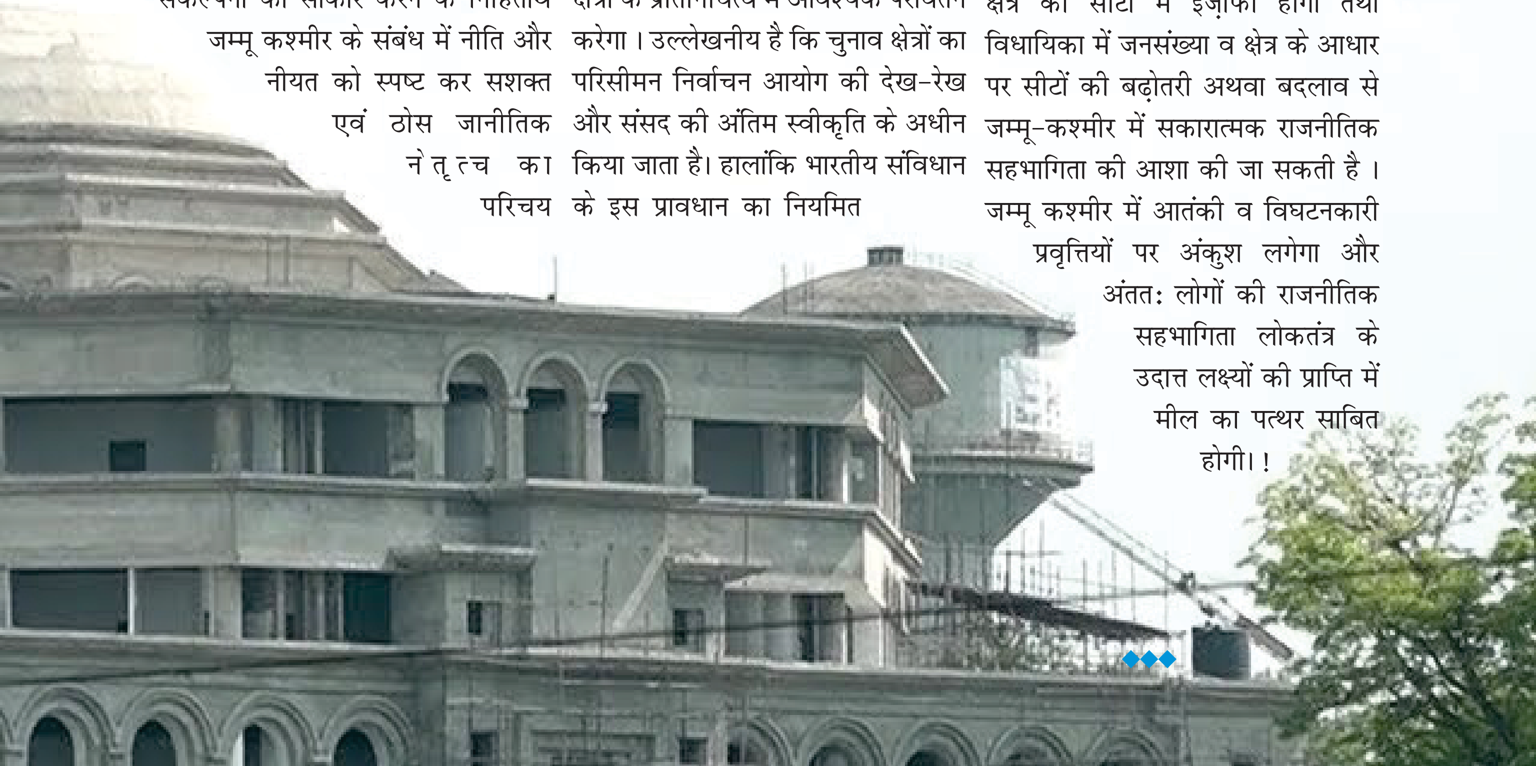

लघु उद्योग भारती की रजत जयंती पर भव्य आयोजन

औद्योगिक संगठन लघु उद्योग भारती की सन 1994 में स्थापना के बाद 25 साल पूर्ण करने पर नागपुर में भव्य रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें देश भर से हजारों लघु उद्यमी तीन दिन तक इस कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। इस आयोजन का विधिवत शुभारंभ किया जायेगा। कार्यक्रम 16 अगस्त से 18 अगस्त के बीच होगा। हिमाचल के 60 से अधिक लघु उद्यमियों का समूह इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करेगा। यह जानकारी लघु उद्योग भारती की हिमाचल इकाई के महासचिव विकास सेठ ने पत्रकार वार्ता के दौरान दी। उन्होंने कहा कि एलयूबी के प्रदेशाध्यक्ष राजीव बंसल के नेतृत्व में हिमाचल का प्रतिनिधित्व करेगा। जिसमें लघु उद्यमियों द्वारा अपनी कारोबारी गतिविधियों के स्टाल भी लगाये जायेंगे। साथ ही सरकार से लघु उद्योगों के हित में योजना तैयार करने व समस्याओं के निराकरण को कारगर कदम उठाने की बात भी की जायेगी। लघु उद्योग भारती अपने रजत जयंती समारोह में लघु व सूक्ष्म उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिये विभिन्न सेमिनारों के अंतर्गत पर्यावरण, मोटिवेशन व तकनीकी विषयों पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, नंदनी नीलकण्ठन, देवी दत्ता पटनायक एवं अन्य विद्वानों का संबोधन भी होगा। राष्ट्रीय स्तर पर लघु एवम सूक्ष्म उद्योगपतियों को तीन श्रेणी में 9 बेहतर कार्य करने वाले उद्यमियों को उनके किये हुए उद्योग प्रगति के आधार पर सम्मानित एवम पुरस्कृत किया जाएगा। ◆◆◆

इतिहास अनुसंधान चिंतन बैठक संपन्न

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी में द्विदिवसीय ''चिन्तन वर्ग'' का आयोजन किया गया। जिसमें प्रदेश एवं प्रदेश के बाहर के लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस चिन्तन वर्ग के उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. ओम प्रकाश शर्मा ने संस्थान की दशा और दिशा पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया। आगामी योजनाओं के संदर्भ में उन्होंने बताया कि शोध संस्थान का वैचारिक मण्डल और लेखक मण्डल मिलकर हिमाचल प्रदेश का सम्पूर्ण इतिहास लिखने का प्रयास करेगा। इस संदर्भ में समस्त लेखक समूह का उन्होंने मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि इतिहास के जितने भी सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक आदि पक्ष हैं उन सभी पक्षों पर सभी यथार्थ तथ्यों के साथ अनुसंधान करके इस कार्य को सम्पन्न किया जाएगा। इस कार्यक्रम में शोध संस्थान के निदेशक श्री चेतराम गर्ग ने बताया कि शोध संस्थान तीन वर्गों में विभाजित है जिनमें प्रथम है प्रशासनिक। दूसरा वैचारिक मण्डल जो अनुसंधान का कार्य करता है तथा तीसरा संगठनात्मक मण्डल जो समाज को संस्थान द्वारा किए गए शोध के संदर्भ में परिचय करवाता है। इन तीनों धाराओं को मिलाकर यह संस्थान समाज को भारत के गौरवमयी इतिहास से परिचित कराने का कार्य कर रहा है। इस द्विदिवसीय चिन्तन वर्ग में संस्थान के अनेक वरिष्ठ अधिकारी एवं सहयोगी तथा अनेक महाविद्यालयों के विभिन्न विषयों के प्राध्यापक एवं शोधकर्ता उपस्थित हुए। जिनमें मुख्य रूप से डॉ. सूरत ठाकुर, डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय, डॉ. भाग चन्द चौहान, डॉ. अंकुश भारद्वाज, डॉ. शिव भारद्वाज, श्री प्यार चन्द परमार, श्री भूमि दत शर्मा, डॉ. मनोज शर्मा, डॉ. बी.आर. ठाकुर, डॉ. मृदुला शारदा, डॉ. ज्योति, डॉ. विपन कुमार आदि विद्वान मौजूद रहे। ◆◆◆

विपत्ति और दुख की घड़ी में दूत बन आए स्वयंसेवक

कुल्लू के बंजार के समीप गाढा गुशैणी में एक निजी बस के अनियंत्रित हो जाने के कारण ड्राईवर के नियंत्रण खोने के फलस्वरूप बस के 500 फीट नीचे नाले में गिरने से बस में सवार 46 यात्रियों के काल कवलित होने और 29 की गंभीर रूप से घायल होने की सूचना प्राप्त हुई है। बस आज सायं 4.00 बजे कुल्लू से औट होते हुए बंजार की ओर निकली थी। आगे एक कैंची मोड पर यह हादसा हुआ। बस में यात्रा करने वालों में अधिकांश छात्र व स्थानीय निवासी थे। दो यात्री अन्य प्रान्तों से भी बताए जा रहे हैं। घटना की जानकारी मिलते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थानीय नगर कार्यवाह रामकृष्ण, जिला व्यवस्था प्रमुख प्रताप सिंह ने कार्यकर्ताओं को सूचना देकर एकत्रित करना शुरू किया। घटनास्थल पर पहले पहुंचने वाले स्थानीय लोगों और प्रशासन की सहायता से मृतकों के शवों को उठाकर स्थानीय राजकीय चिकित्सालय में लाए। जहां विशेष चिकित्सकों के दल ने मृतकों की शिनाख्त कर उनकी मृत्यु की घोषणा की। घायलों को जिला अस्पताल कुल्लू रेफर कर दिया गया है। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक वीरेन्द्र जी ने 25 शवों को क्रम से कधों पर लादकर ऊपर चिकित्सालय तक पहुंचाया। बंजार के संघ के कार्यकर्ता रामकृष्ण की देखरेख में 50 स्वयंसेवकों ने प्रशासन के पहुंचने से पूर्व स्थिति को संभाल लिया था और मृतकों व घायलों को उचित स्थान तक पहुंचाया। ◆◆◆

नीदरलैंड की तीन कंपनियां हिमाचल प्रदेश में निवेश करने के लिए तैयार

नीदरलैंड की तीन कंपनियां ओमनीवेंट, टकारा और आइस वर्ल्ड ने हिमाचल में निवेश की इच्छा जताई है। इन तीनों कंपनियों ने फल-सब्जियों के स्टोरेज से लेकर कंपनियों को कच्चा माल उपलब्ध करवाने, बायोटेक स्केटर और आइस स्केटिंग रिंग में निवेश के लिए अपनी हामी भरी है। नीदरलैंड में रोड-शो के दौरान मुख्यमंत्री ने इन तीनों कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ वन-टू-वन बैठक कर उन्हें प्रदेश में निवेश का निमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान उद्यमियों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी दी। ओमनीवेंट बड़ी कंपनियों को खाद्य प्रसंस्करण के लिए फल और सब्जियों की सप्लाई करती है। इसके लिए कंपनी हिमाचल में भी अत्याधुनिक सुविधा से लैस भंडारण केंद्र खोलेगी। इसी तरह टकारा बायो कंपनी ने हिमाचल में बायो-टेक सेक्टर में निवेश के

लिए हाथ बढ़ाया है। यह कंपनी प्रदेश में पैदावार बढ़ाने के लिए निवेश करेगी। जर्मनी भी कृषि, पर्यटन, परिवहन और अधोसंरचना क्षेत्र में निवेश को तैयार है। ◆◆◆

एनसीसीई ने 41 महिला कोआप्रेटरों को किया प्रशिक्षित

देश में सहकारी संस्थाओं की शीर्ष संस्था भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ की शिक्षा विंग एनसीसीई ने हाल ही में देश की महिला कोआप्रेटरों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए नई दिल्ली में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न पहलुओं पर महिलाओं को प्रशिक्षित करना था। महिलाओं को सहकारी समितियों के विकास में भूमिका निभाने, समाज के वितीय विवरणों को समझना आदि के बारे में शिक्षित किया गया। इसके अलावा कौशल विकास, सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग, सोशल मीडिया, कैशलेस लेनदेन के तरीके, संचार कौशल, आय सृजन के लिए उद्यमी कौशल, राष्ट्रीय महिला कोष की भूमिका जैसे प्रासंगिक विषयों पर भी विशेषज्ञों द्वारा चर्चा की गई इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में देश-भर में स्थित सहकारी समितियों से करीब 41 निर्वाचित महिलाओं ने भाग लिया। ◆◆◆

सेवाभारती द्वारा सीतानवमी पर सर्वजातीय सामूहिक विवाह

जयपुर में सेवाभारती द्वारा सीतानवमी पर सर्वजातीय सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया जिसमें समाज की भिन्न-भिन्न 11 बिरादरियों के 41 वर-वधु का सामूहिक विवाह संस्कार एक ही पण्डाल में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर वधुओं को पूज्य संत अकिंचन महाराज, मुनादास, संत हरिशंकरदास एवं संत मनीषदास एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का सानिध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सेवा भारती राजस्थान ने सर्वजातीय विवाह की इस यात्रा का शुभारम्भ 10 वर्ष पूर्व भवानी मण्डी से समाज में समरसता लाने व अनावश्यक व्यय से बचने के उद्देश्य से किया। अब तक इस प्रयास द्वारा पूरे राजस्थान के 13 जिलों के 25 स्थानों के 1897 जोड़े विवाह के पवित्र बन्धन में बंध चुके हैं। बहुत ही सामान्य पंजीयन शुल्क लेकर विदाई के पश्चात् गृहस्थी के लिए आवश्यक सभी सामग्री समाज के सहयोग से नवदम्पति को भेंट की जाती है। सामाजिक न्याय विभाग का प्रमाण पत्र भी दिया जाता है। नव दम्पति में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित हो इस हेतु सेवा भारती द्वारा प्रत्येक वर-वधु दोनों को तुलसी पौधे लगे 82 गमले प्रदान किए गए। इतना ही नहीं राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जहां यदा कदा विवाह के अवसरों पर जातीय संघर्ष जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटती है वहीं यह आयोजन समाज के सभी जाति वर्गों की उपस्थिति में सम्मानपूर्वक वैवाहिक अनुष्ठान पूर्ण होकर उनके जीवन की मधुर स्मृति बनता है। ◆◆◆

31 जुलाई तक लाभार्थियों की सूची दें राज्य सरकारें

किसानों के लिए निश्चित आय योजना पीएम किसान सम्मान निधि के विस्तार के लिए केंद्र ने सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से लाभार्थियों की प्रमाणित सूची उपलब्ध कराने को कहा है। इस योजना के तहत करीब 14.5 करोड़ किसानों को फायदा पहुंचने की उम्मीद है। इस स्कीम को इसी साल 24 फरवरी को लांच किया गया था। पहले यह योजना सिर्फ छोटे और सीमांत किसानों के लिए थी। इसमें छह राज्य हरियाणा, पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में 50 प्रतिशत से अधिक किसान इसका लाभ पा चुके हैं। हालांकि, अन्य राज्यों में भी ऐसे किसान जिनके पास दो हैक्टेयर यानी करीब पांच एकड़ जमीन है, उन्हें भी दिसंबर 2018 से मार्च 2019 की अवधि के लिए दो-दो हजार रूपये योजना की पहली किस्त के रूप में मिल चुके हैं। कृषि मंत्रालय पर सात जून को अपडेट किए गए डाटा से पता चलता है कि पश्चिम बंगाल, सिक्किम, दिल्ली और लक्षद्वीप में एक भी किसान इस योजना का लाभ नहीं पा सके हैं। ◆◆◆

आस्था और श्रद्धा का प्रतीक मां शूलिनी मेला सोलन

सोलन तत्कालीन महासू जिले की तहसील मात्र थी। शिमला जिले के अवतरण के साथ-साथ सोलन भी वर्तमान रूप में उभरा। बदलती परिस्थितियों में आज सोलन महानगर का रूप ले रहा है। सोलन जनपद, रियासत बघाट की राजधानी था। लेखकों ने बघाट शब्द की उत्पति 'बहुघाट' से मानी है। बहुघाट से बहुत घाटों वाले क्षेत्र से सम्बन्ध बिठाया गया है। आज भी सोलन के असंख्य कस्बों के नाम के अन्त में घाट शब्द का प्रयोग होता है। एक दूसरे मत के अनुसार बघाट की उत्पति 'बारह घाट' से हुई है।

सोलन शहर की अधिष्ठात्री देवी मां शूलिनी है। भगवती शूलिनी की अराध्य भूमि के कारण ही सोलन शब्द की व्युत्पति हुई है। शूलिनी भगवती के विषय में लोगों की मान्यता है कि मां पेट की शूल पीड़ा को दूर करती है। प्रमाणों के अभाव में शूलधारिणी होने के कारण यह नाम सार्थक होता है। मार्कण्डेय पुराण में भगवती दुर्गा के प्रादुर्भाव होने पर भिन्न-भिन्न देवताओं ने भगवती को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए। भगवान शंकर ने अपने त्रिशूल से एक शूल निकालकर भगवती को प्रदान किया। 'शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौतस्यै पिनाकपृक्'। त्रिशूल धारिणी भगवती दुर्गा ने इसी त्रिशूल से अनेक असुरों का संहार किया। इसी दिव्य प्रभाव के कारण भगवती दुर्गा के लिए शूलिनी नाम प्रसिद्ध हो गया। देवी भागवत पुराण में भी गायत्री भगवती के एक हजार आठ नामों में भगवती शूलिनी का नाम आता है। शरावती शरानन्दा शरज्योत्सना शुभानना शरभा शूलिनी शुद्धा शबरी शुकवाहना। इस प्रकार मां शूलिनी भगवती को शास्त्रीय दृष्टि से भी देवी रूप प्राप्त है। सोलन शहर के पूर्वी छोर में भगवती शूलिनी देवी का मंदिर है। यह बघाट नरेश के राजवंश की कुल देवी है। आषाढ़ मास के द्वितीय रविवार को शूलिनी माता के मंदिर में मेले का आयोजन होता है। शूलिनी माता मूल मंदिर से तीन दिनों के प्रवास पर अपनी बड़ी बहन दुर्गा के आतिथ्य पर दुर्गा मंदिर में पधारती हैं। शूलिनी मेले का प्रारम्भ मन्दिर में भगवती शूलिनी के पूजा पाठ से होता है। मेले के प्रथम दिन बघाट नरेश शोभा यात्रा के लिए शूलिनी माता को पालकी में बैठाकर मेले का शुभारम्भ किया करते थे। वर्तमान में इस कार्य को बघाट नरेश के सम्बन्धी या नगर के प्रमुख नागरिक किया करते हैं। देवी की मुख्य मूर्ति को पालकी में सजाकर लोक वाद्य की मनमोहक धुनों तथा असंख्य श्रद्धालुओं के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है।

शोभायात्रा का शुभारम्भ मूल मंदिर से होता है। पुनः पुरानी कचहरी, चौक बाजार, अपर बाजार और माल रोड़ से होती हुई गंज बाजार के मंदिर पहुँचती है। तीन दिन तक मेहमानी करती है। इन तीन दिनों में प्रदेश भर के विभिन्न भागों से मां को मानने वाले भगवती के चरणों में पहुंचकर नतमस्तक होते हैं। शूलिनी मां को कुल देवी मानने वाले नए गेहूं की नई फसल का रोट चढ़ाते हैं। यह परम्परा सालों से चली आ रही है। रोट चढ़ाने के बाद ही लोग नई फसल का उपभोग करते हैं। पहले मेले का आयोजन गंज बाजार मंदिर के समीप छोटे प्रांगण तथा खेतों में होता था परन्तु शहर के भवनों के घनत्व व उभड़ती भीड़ को देखते हुए तीन दिनों तक चलने वाले मेले का आयोजन ठोडो ग्राउंड में आयोजित किया जाता है। मेले में आरम्भ से ही ठोडा खेल चलता आ रहा है। मेले में अनेक प्रदर्शनियां, प्रतियोगिताएं, विभागों की प्रदर्शनियां तथा रात्रि को स्थानीय एवं बाहरी कलकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। कब्बडी, वॉलीवाल की बाहरी राज्यों से पहुंची टीमें अपने कौशल का अद्भुत प्रदर्शन करती हैं। विद्युत चालित झूलों तथा विभिन्न खेल उपकरणों में भाग लेकर उपस्थित जनसमूह आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है।

पहले इस मेले का आयोजन मंदिर कमेटी करती थी। आज इसके व्यापक स्तर को देखते हुए नगर के प्रमुख नागरिकों की कमेटियाँ, स्थानीय नगर पालिका तथा जिला प्रशासन के सहयोग से प्रबन्ध किया जाता है। जगह-जगह स्थानीय दुकानदारों को मुफ्त में स्टाल वितरित किए जाते हैं। इस भव्य आयोजन की प्रमुख विशेषता यह है कि इन तीन दिनों में स्थानीय छोटे-बड़े व्यापारी यथाशक्ति दिल खोल कर आर्थिक योगदान कर मां को साक्षी मान उमड़ते जन-समूह का अथाह आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। माँ शुलिनी इस शहर को प्यार की डोरी में पिरोए हुए है। ◆◆◆

राइजिंग हिमाचल
ग्लोबल इन्वेस्टर मीट

-डॉ0 पी.एल.वर्मा

हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य में निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 7-8 नवंबर, 2019 को पहली विश्व स्तरीय इन्वेस्टर मीट आयोजित करने जा रही है। इस मीट के माध्यम से प्रदेश सरकार ने कृषि व्यवसाय, खाद्य प्रसंस्करण, पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी, विनिर्माण एवं औषधि, पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन, हाइड्रो एवं नवीनीकरण ऊर्जा, हैल्थकेयर एवं आयुष, रियल एस्टेट एवं शहरी विकास, सूचना प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा एवं कौशल विकास जैसे आठ चिन्हित क्षेत्रों में लगभग 85 हजार करोड़ रुपये का निवेश हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस सन्दर्भ में प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं देश के विभिन्न राज्यों व विदेशों का दौरा करके निवेशकों को प्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। साथ ही प्रदेश सरकार ने भी निवेशकों की समस्याओं को दूर करने तथा निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए अनेकों ऐसे कदम उठाये हैं, जो निश्चित तौर पर निवेश वृद्धि में सहायक होंगे।

प्रदेश सरकार ने निवेश सम्बन्धी अनेकों प्रावधानों को सरल किया है। प्रदेश सरकार द्वारा निवेश के इच्छुक उद्योगपतियों की समस्याओं के समाधान के लिए औद्योगिक नीति में अनेक सकारात्मक बदलाव किए गये हैं। इन प्रावधानों में उद्योगों को बिजली ड्यूटी में छूट, औद्योगिक क्षेत्रों की अधोसरंचना में सुधार, सस्ती दरों पर जमीन, स्टाम्प ड्यूटी में छूट, ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया, प्रोजेक्ट को एकल खिड़की योजना के माध्यम से 45 दिनों के अंदर स्वीकृति प्रदान करने के साथ-साथ अनेकों ऐसे प्रावधाान किए हैं जो प्रदेश में निवेश की प्रक्रिया को सरल करने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। इन सभी प्रावधानों के चलते इन्वेस्टर मीट के प्रदेश में निवेश वृद्धि के लिए कारगर सिद्ध होने की संभावना जताई जा रही है। इस निवेश के आने से जहां प्रदेश सरकार की अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार आने की उम्मीद है वहीं निवेश में वृद्धि होने से उत्पादन तथा रोजगार में भी वृद्धि की संभावना है।

अपने अस्तित्व के लगभग 50 वर्षों के पश्चात् यदि हम प्रदेश के राज्य सकल घरेलु उत्पाद के घटकों को देखें तो वित्तीय वर्ष 2017-18 में प्रदेश के राज्य सकल घरेलु उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 13.73 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्र का योगदान 43.01 प्रतिशत, परिवहन, संचार व व्यापर का योगदान 11.66 प्रतिशत, वित्त एवं रियल एस्टेट का योगदान 14.87 प्रतिशत तथा सामाजिक व निजी सेवाओं का योगदान 16.73 प्रतिशत है। प्रदेश के रोजगार कार्यालयों के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में वर्तमान में 15 से 45 वर्ष की आयु वर्ग के 8,92,988 युवा बेरोजगार हैं। साथ ही प्रति वर्ष हजारों की संख्या में युवा अनेकों शिक्षण संस्थानों से निकल कर रोजगार पाने के लिए इस श्रम बल में जुड़ते जा रहे हैं। जहां तक उन्हें रोजगार मुहैया कर पाने की बात है, प्रदेश सरकार अपने बूते ऐसा कर सकने में अक्षम है। एक छोटा राज्य होने पर भी वर्तमान में प्रदेश के विभिन्न सरकारी संस्थानों में काम करने वाले लोगों की संख्या 2 लाख से अधिक है। क्षेत्र वार रोजगार की संभावनाओं की बात करें तो प्रदेश का कृषि क्षेत्र सीमान्तीकरण की ओर जा रहा है।

निःसंदेह प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, अधोसरंचना व अन्य तत्व औद्योगीकरण के लिए अनुकूल वातावरण प्रस्तुत नहीं करते, किन्तु कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें यही परिस्थितियां चुनौती न होकर एक अवसर के रूप में कार्य कर सकती हैं। कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें यही निवेश किया जा सके तो यह क्षेत्र प्रदेश की आर्थिकी में एक बड़ा योगदान अदा कर सकते हैं। ऐसे कुछ क्षेत्रों में पर्यटन, आई.टी. तथा कृषि एवं बागवानी क्षेत्र से सम्बंधित गतिविधियों में प्रयुक्त उद्योग सम्मिलित हैं। औद्योगीकरण की दिशा में पिछली उपलब्धियों के रहते तथा रोजगार की दृष्टि से अपने महत्व के चलते प्रदेश सरकार ने एक बार फिर प्रदेश में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए इन्वेस्टर मीट के माध्यम से एक सकारात्मक पहल की है। ऐसे में उम्मीद की जा सकती है कि यह इन्वेस्टर मीट प्रदेश में निजी निवेश की दिशा में एक कारगर कदम होगा जो प्रदेश की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के साथ-साथ प्रदेश के युवाओं को रोजगार मुहैया करवाने में अति विशिष्ट योगदान देगा। ◆◆◆

क्रिकेट विश्व कप झलकियाँ

लीड्स में खेले गए मैच में श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। श्रीलंका ने नौ विकेट पर 232 रन बनाए। जवाब में इंग्लैंड की टीम 212 रनों पर ही ऑल आउट हो गई। श्रीलंका ने 20 रनों से जीत दर्ज की। मलिंगा ने चार विकेट चटकाए। हाईलाइट्स लीड्स में खेले गए मैच में श्रीलंका ने इंग्लैंड को 20 रनों से हरा दिया है श्रीलंका ने नौ विकेट खोकर 233 रनों का छोटा लक्ष्य दिया था श्रीलंका ने जबरदस्त गेंदबाजी की और इंग्लैंड को रन बनाने से रोका मलिंगा ने चार विकेट लिए, इंग्लैंड की टीम 212 रन पर ही ऑल आउट हो गई।

इसके अलावा डि सिल्वा ने भी तीन अहम विकेट लिए लीड्स एंजिलो मैथ्यूज के अर्धशतक के बाद तेज गेंदबाज लसिथ मललगा की शानदार गेंदबाजी के दम पर श्रीलंका ने विश्व कप के कम स्कोर वाले मैच में खिताब की दावेदार मेजबान इंग्लैंड को 20 रन से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश की उम्मीदें बरकरार रखी हैं। इंग्लैंड ने श्रीलंका को नौ विकेट पर 232 रन पर रोक दिया था जिसमें मैथ्यूज ने 115 गेंद में 85 रन बनाए थे। जवाब में 1996 की चैंपियन श्रीलंकाई टीम ने इंग्लैंड को 47 ओवर में 212 रन पर आउट करके इस विश्व कप में दूसरी जीत दर्ज की। टॉप कॉमेंटबडिया Jai Shree Raam सभी कॉमेंट्स देखें कॉमेंट लिखें मैन ऑफ द मैच मलिंगा ने 43 रन देकर चार विकेट लिए और इंग्लैंड के शीर्षक्रम को नेस्तनाबूद कर दिया। उन्होंने जेम्स विंस (14), जानी बेयरस्टो (0) और जो रूट (57) के अलावा जोस बटलर (10) के कीमती विकेट चटकाए।

ऑफ स्पिनर धनंजय डि सिल्वा ने निचले क्रम के तीन विकेट लिए। रूट के 89 गेंद में अर्धशतक के बाद बेन स्टोक्स ने 89 गेंद में 82 रन बनाकर इंग्लैंड की उम्मीदें कायम रखी लेकिन दूसरे छोर से विकेट गिरते रहे। इस जीत के बाद श्रीलंका छह मैचों में छह अंक लेकर पांचवें स्थान पर है जबकि इंग्लैंड छह मैचों में आठ अंक के साथ तीसरे स्थान पर है। वर्ल्ड कप का पॉइंट्स टेबल देखिए इससे पहले इंग्लैंड के लिए आर्चर ने 52 रन देकर तीन विकेट लिए। इस विश्व कप में पांचवीं बार उन्होंने पारी के तीन या अधिक विकेट चटकाए। अब उनके ऑस्ट्रेलिया के मिशेल स्टार्क के समान 15 विकेट हो गए हैं। मार्क वुड ने 40 रन देकर तीन विकेट लिए। श्रीलंका ने दो विकेट महज तीन रन के स्कोर पर गंवा दिए थे। इसके बाद एंजिलो मैथ्यूज ने संकटमोचक की भूमिका निभाते हुए नाबाद 85 रन बनाकर टीम को 50 ओवर पूरे करके 200 रन के पार पहुंचाया। विश्व कप में पहला मैच खेल रहे अविष्का फर्नांडो ने 49 रन बनाए। WC मलिंगा ने तोड़ा मैक्ग्रा मुरली का रेकॉर्ड इससे पहले श्रीलंका के कप्तान दिमुथ करुणारत्ने ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया लेकिन शुरुआत बेहद खराब रही। करुणारत्ने दूसरे ओवर की आखिरी गेंद पर महज एक रन के स्कोर पर आउट हो गए। आर्चर की गेंद पर उन्होंने विकेट के पीछे जोस बटलर को कैच थमाया।

दो गेंद बाद कुसल परेरा ने क्रिस वोक्स की गेंद पर थर्डमैन में शॉट खेला जहां मोईन अली ने कैच लपकने में कोई चूक नही की। तीसरे नंबर पर आए फर्नांडो ने संभलकर खेलते हुए आर्चर का दबाव हटाया और उनके एक ओवर में 14 रन ले डाले। ENGvsSL, देखें स्कोरकार्ड पावरप्ले के नौवें ओवर में फर्नांडो ने आर्चर को छक्का लगाया तो गेंद मैदान से बाहर चली गई। वह हालांकि वुड की गेंद पर थर्डमैन में आदिल रशीद को कैच देकर लौटे। उन्होंने 39 गेंद की पारी में दो छक्के और छह चौके लगाए।

श्रीलंका का स्कोर 13वें ओवर में तीन विकेट पर 62 रन था। पूर्व कप्तान मैथ्यूज ने 84 गेंद में अर्धशतक बनाया। श्रीलंकाई टीम 11वें से 40वें ओवर के बीच एक ही चौका लगा सकी। कुसल मेंडिस (46) और मैथ्यूज की चौथे विकेट की 71 रन की साझेदारी को राशिद ने तोड़ा जब मेंडिस शॉर्ट मिडविकेट पर मॉर्गन को कैच देकर लौटे। जीवन मेंडिस आते ही उन्हें रिटर्न कैच देकर लौट गए। ◆◆◆

योग में रोज़गार की अपार संभावनाएं

... -डॉ. अर्पिता नेगी

भारत ने सम्पूर्ण विश्व को अनेक उपहार प्रदान किए हैं इन्हीं उपहारों की श्रृंखला में आदिकाल से चली आ रही योग की परंपरा अविस्मरणीय है। यों तो संपूर्ण विश्व सदैव दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य के लिए हर प्रकार के शोध और अनुसंधान में रत रहता है परन्तु फिर भी आज संपूर्ण विश्व तनाव और व्याधियों से ग्रस्त होता जा रहा है। आज यही कारण है कि संपूर्ण विश्व योग की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है और उसे अपना भी रहा है उसी का परिणाम है कि आज सम्पूर्ण विश्व में 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसका श्रेय हम अपनी ऋषि परंपरा के साथ साथ हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी को भी देते हैं उन्हीं के प्रयासों से आज संपूर्ण विश्व योग दिवस को मना रहा है।

जिस प्रकार से कोई साधक कल्पवृक्ष के समक्ष जाकर अपनी इच्छा को व्यक्त करता है तो कल्पवृक्ष उसकी समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर देता है। उसी प्रकार से योग करने वाला व्यक्ति जिस भी भावना से योग को करता है उसकी उस भावना को योग पूर्ण कर देता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व में योगाचार्यों, योग प्रशिक्षकों की आवश्यकता बहुत तेज़ी से बढ़ती जा रही है उसी का परिणाम है कि भारत के सभी प्रमुख विश्वविद्यालय एवं संस्थान योग विषय में कई प्रकार के पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहे हैं जिसके माध्यम से छात्र-छात्राएं योग के प्रशिक्षण को प्राप्त कर देश-विदेश में जाकर समस्त मानव जाति के कल्याण में कार्य कर रहे हैं आज चारों ओर योगाचार्यो को बहुत ही सम्मान से देखा जाता है और ऐसी आशा भी की जाती है कि वे योग विद्या के माध्यम से समाज में होने वाली बीमारियों तनाव आदि को दूर करने में सबसे प्रमुख औषधीय की भांति कार्य करते हैं यदि कोई व्यक्ति योग में अपने भविष्य को देखता है तो उसके पास बहुत सारे पाठ्यक्रम हैं, जिनकी शिक्षा प्राप्त कर वह आसानी से योग में अपना करियर बना सकता है। इंटर के बाद योग में BA, B.Sc योग प्रमाणपत्रों का कोर्स किया जा सकता है तथा जिन विद्यार्थियों ने B.A. बीकॉम आदि किया है वे सीधे योग का कोर्स कर सकते हैं जो छात्र B.Sc हैं वे सीधे M.Sc योग की डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। B.A. योग का पाठ्यक्रम 3 वर्ष का है व एमए योग का पाठ्यक्रम दो वर्ष का होता है तो एमएससी की उपाधि के बाद योग मे M Phil एक वर्षीय पाठ्यक्रम इसके उपरांत PHD तीन वर्षीय पाठ्यक्रम किया जा सकता है।

इन पाठ्यक्रमों को करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्व विद्यालय श्रीनगर गढ़वाल, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान नई दिल्ली बरकतुल्लाह विश्व विद्यालय भोपाल हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय शिमला केवल्य धाम लोनावाला पुणे आदि से योग में नियमित डिग्री प्रमाणपत्रों आदि की उपाधि प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ जो व्यक्ति नियमित विश्वविद्यालय नहीं आ सकते वे ओपन विश्व विद्यालयों के माध्यम से योग में BA, MA में डिप्लोमा आदि की डिग्री प्राप्त कर सकते हैं जिसके लिए उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी हल्द्वानी राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय इलाहाबाद आदि हैं। यदि छात्र योग में भली प्रकार से प्रशिक्षण ले लेते हैं तो वे विश्वविद्यालयों में योग प्रशिक्षक, सहायक आचार्य, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर के रूप में अपना करियर बना सकते हैं असिस्टेंट प्रोफ़ेसर के लिए योग विषय में स्नातकोत्तर उपाधि के साथ-साथ नेट अथवा PHD की डिग्री आवश्यक है।

प्रशिक्षक के लिए योग में PG डिप्लोमा न्यूनतम योग्यता है। सभी प्रमुख होटलों एवं अस्पतालों में योग प्रशिक्षकों को नियुक्त किया जाता है जिससे वे योग चिकित्सा के द्वारा व्यक्तियों को लाभ पहुंचा सके विदेश में कार्य करने वाले योग प्रशिक्षकों को रहना खाना नि:शुल्क दिया जाता है और प्रारंभिक स्तर पर 60, हज़ार प्रतिमाह प्रदान किए जाते हैं। यदि योग प्रशिक्षक अनुभवी है तो प्रारंभ में ही एक डेढ़ लाख रुपया प्रतिमाह एवं आवास की सुविधा भी दी जाती है। इसलिए जो भी छात्र-छात्राएं योग में करियर बनाना चाहते हैं वे किसी अच्छे विश्वविद्यालय अथवा संस्थान में नियमित रूप से प्रशिक्षण लेकर अपना भविष्य संवार सकते हैं। सरकार के द्वारा भी अपने योग केन्द्र को खोलने के लिए सहायता दी जाती है परंतु इसके लिए गहरी लगन एवं नियमित प्रशिक्षण एवं अच्छे ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है। यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से योग की उपाधि को प्राप्त कर पाए तो वह बहुत आसानी से अच्छे रोज़गार को प्राप्त कर सकता है। ◆◆◆

परदादा यूको बैंक संस्थापक पड़पोता निकला कर्जदार

परदादा ने की थी जिस यूको बैंक की स्थापना, उसी ने पड़पोते यश बिड़ला को घोषित किया विलफुल डिफॉल्टर कोलकाता के यूको बैंक ने यशोवर्धन बिड़ला को विलफुल डिफॉल्टर घोषित कर दिया है। यश बिड़ला के ग्रुप की एक कंपनी बिड़ला सूर्या लिमिटेड द्वारा 67 करोड़ रुपये का कर्ज न चुकाने के चलते उन्हें डिफॉल्टर घोषित किया गया है। टाइम्स न्यूज नेटवर्क हाइलाइट्स बैंक ने कहा कि कंपनी के पास 100 करोड़ रुपये की क्रेडिट लिमिट थी बैंक ने कहा कि इस क्रेडिट लिमिट का 67 करोड़ रुपये से ज्यादा ब्याज बाकी था बिड़ला ग्रुप की अधिकतर कंपनियां घाटे में चल रही हैं और कर्ज चुकाने की स्थिति में नहीं हैं।

कोलकाता के इस बैंक की स्थापना यश बिड़ला के परदादा घनश्याम दास बिड़ला ने की थी। नई दिल्ली कोलकाता के यूको बैंक ने यशोवर्धन बिड़ला को विलफुल डिफॉल्टर घोषित कर दिया है। यश बिड़ला के ग्रुप की एक कंपनी बिड़ला सूर्या लिमिटेड द्वारा 67 करोड़ रुपये का कर्ज न चुकाने के चलते उन्हें डिफॉल्टर घोषित किया गया है।

> *अब मल्टीप्लेक्स देंगे केवल ई-टिकट, सरकार ने किया अनिवार्य केंद्र सरकार ने मल्टीप्लेक्स के लिए अब ई-टिकट जारी करना अनिवार्य कर दिया है। सरकार के इस कदम के साथ ही सिनेप्लेक्सेज द्वारा दिए जा रहे कलर्ड टिकट अब इतिहास बन सकते हैं।*

बिड़ला को विलफुल डिफॉल्टर बताते हुए, बैंक ने कहा कि कंपनी के पास 100 करोड़ रुपये की क्रेडिट लिमिट थी, जिसका 67 करोड़ रुपये से ज्यादा ब्याज बाकी था। इस लोन को 2013 में एक नॉन-परफॉर्मिंग ऐसेट के तौर पर क्लासिफाई किया गया था। अगर किसी प्रमोटर को किसी कर्जदाता द्वारा विलफुल डिफॉल्टर घोषित कर दिया जाता है तो न केवल उसके मौजूदा बिजनस, बल्कि किसी भी कंपनी जिसमें वह डायरेक्टर है, उसे फंडिंग नही मिल सकती। अब परदादा तो आयेंगे नही बचाने इससे अच्छा तो कर्ज़ चुका दो। संकट में ग्रुप की ज्यादातर कंपनियां बिड़ला सूर्या कंपनी ने मल्टी-क्रिस्टैलिन सोलर फोटोवॉल्टाइक सेल्स के निर्माण के उद्देश्य से बैंक से लोन लिया था। ग्रुप के पास एक दर्जन से ज्यादा कंपनियां हैं जिनमें जेनिथ स्टील, बिड़ला पावर, बिड़ला लाइफस्टाइल और श्लोका इन्फोटेक जैसी कंपनियां शामिल हैं। अधिकतर कंपनियां घाटे में चल रही हैं और कर्ज चुकाने की स्थिति में नही हैं। कंपनी को पिछले साल भी परेशानी का सामना करना पड़ा था जब ग्रुप की तीन कंपनियों- बिड़ला कोटसिन, बिड़ला श्लोका एजुटेक और जेनिथ बिड़ला पैसे के लेनदेन को लेकर जांच के घेरे में आ गईं थी। यह जांच जब फिक्स्ड डिपॉजिट निवेशकों द्वारा अपने पैसे वापस न मिलने की शिकायत के बाद शुरू हुई थी।

परदादा ने ही की थी बैंक की स्थापना खास बात है कि कोलकाता के इस बैंक की स्थापना यश बिड़ला के परदादा घनश्याम दास बिड़ला ने की थी। जी डी बिड़ला के भाई रामेश्वर दास बिड़ला, यश बिड़ला के पिता अशोक बिड़ला के दादा थे। यश बिड़ला ने 23 साल की उम्र में उस समय पारिवार का कारोबार संभाला जब बेंगलुरू में एक एयर क्रैश में उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई। कई सालों तक ग्रुप का संचालन सलाहकारों ने किया। बिड़ला श्लोका एजुटेक के तहत यह ग्रुप कई चैरिटेबल संस्थान और स्कूल का संचालन भी करता है। कौन होता है विलफुल डिफॉल्टर? बैंकर्स के मुताबिक, किसी कर्जदार को विलफुल डिफॉल्टर घोषित करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उन्हें अपनी स्थिति को पेश करने का पर्याप्त मौका मिलता है। किसी कर्जदार को विलफुल डिफॉल्टर तब बताया जाता है जब वह जानबूझ कर कर्ज नही चुकाता है। यानी, उसके पास कर्ज चुकाने के लिए पर्याप्त संसाधन है, फिर भी लोन रीपेमेंट नही कर रहा।

इसके अलावा कर्जदाता को बिना बताए ऐसेट्स की बिक्री और पैसे को दूसरे कामों में लगाने के चलते भी किसी व्यक्ति को विलफुल डिफॉल्टर घोषित किया जाता है। ◆◆◆

...-चेतन कौशल

गुरूकुल पद्धति एवं संस्कार

प्राचीन भारतीय नि:शुल्क शिक्षा-प्रणाली अपने आप में विशाल हृदयी होने के कारण विश्व भर में जानी और पहचानी गई थी। भारत विश्वगुरु कहलाया था। भारतीय शिक्षा गुरुकुल परम्परा पर आधारित थी, जिसमें सहयोग, सहभोज, सत्संग, लोक-अनुदान की पवित्र भावना, सद्विचार, सत्कर्मों से विश्व का कल्याण होता था।

गुरुकुल कभी किसी का शोषण नहीं, मात्र पोषण ही करते थे। तभी तो सारी धरती गोपाल की है।' भारत मात्र उद्घोष ही नहीं करता है, सारे विश्व को एक परिवार भी मानता है। गुरुकुल में राजा, रंक और भिखारी सभी के होनहार बच्चों को अपने जीवन में आगे बढ़ने का एक समान सुअवसर प्राप्त होता था। उनके साथ एक समान व्यवहार होता था। गुरु व आचार्य जन शक्तियों के अंधेरे जीवन में तात्विक विषय ज्ञान-विज्ञान, ध्यान, लग्न, मेहनत, योग्यता, निपुणता, प्रतिभा और शुद्व आचार-व्यवहार जैसे सद्गुणों का प्रकाश करके उन्हें दीप्तमान करते थे। इससे बच्चों के जीवन की नींव ठोस होती थी। उनके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलित विकास होता था। बच्चे विश्वबंधु बनते थे जो गुरु व आचार्य के आशीर्वाद और बच्चों की लग्न तथा मेहनत का ही प्रतिफल होता था।

भारतीय गुरुकुलों में शिक्षण-शुल्क प्रथा का अपना कोई भी महत्व नहीं था। गुरुकुलों में शुल्क रहित शिक्षण-प्रथा से ही गुरु तथा शिष्य का निर्वहन, साधना, समृद्धि और विकास होता था। स्वेच्छा से सामर्थ्यानुसार, बिना किसी भय के खुशी-खुशी से दिया जाने वाला लोक अनुदान बच्चों के जीवन का निर्माण करता था।

कोई भी प्राचीन गुरुकुल एक वह दिव्य कर्मशाला थी जहां बच्चों में योग्यता पनपती थी। वहां उन्हें दु:ख-सुख का सामना करने का अनोखा साहस मिलता था। जीवन के हर क्षेत्र में आत्मसम्मान के साथ सिर उठाकर चलने और समय पड़ने पर शेर की तरह दहाड़ करने के साथ-साथ जीने और मरने की भी एक अनोखी मस्ती प्राप्त होती थी। इन गुणों को प्रदान करता था-आचार्यों, अभिभावकों, राजनीतिज्ञों और प्रशासकों का योगदान। गुरुकुलों की गरिमा अविरल जलधारा समान प्रवाहित होती रहती थी। गुरुकुलों को अनुदान से प्राप्त अन्न, धन, वस्त्र और भूमि आदि पर मात्र गुरुकुल में कार्यरत मान्य आचार्यों का जितना स्वामित्व होता था, अध्ययनरत, अध्ययनकाल तक उस पर शिष्यों का भी उतना ही स्वामित्व रहता था। दोनों में प्रेम, सहयोग, त्याग और बलिदान की पवित्र भावना होती थी। आचार्य शिष्यों के जीवन का निर्माण करते थे, उनका मार्गदर्शन करते थे जबकि शिष्य पूर्ण ज्ञानार्जित करने के पश्चात् मात्र कर्तव्य परायण होकर अपने माता-पिता, गांव, समाज, शहर और राष्ट्र ही की सेवा करते थे। भारतीय शिक्षा-क्षेत्र मात्र नि:स्वार्थ सेवा-क्षेत्र रहा है जिसमें निष्कामी आचार्य तथा ज्ञान पिपासु विद्यार्थियों की महती आवश्यकता बनी रहती थी। वह तो सदैव सबके लिए ज्ञान का प्रणेता और मार्ग दर्शक ही था। आचार्य भली प्रकार जानते थे - उन्हें विद्यार्थियों को किस प्रकार का शिक्षण देने के साथ- प्रशिक्षण भी देना है।

वैसे शिक्षण-प्रशिक्षण लेने की कोई आयु नहीं होती है। आवश्यकता है तो मात्र तुम्हारे (विद्यार्थी) के दृढ़ निश्चय की कि तुम क्या करना चाहते हो, क्या कर रहे हो? तुम क्या बनना चाहते हो, क्या बन गए हो? तुम क्या पाना चाहते हो, तुमने अभी तक पाया क्या है? अगर तुम अपना उपाय पाने में बारबार असफल रहे हो, उसके लिए तुम्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता है, किसी शंका का समाधान ही करवाना चाहते हो तो आओ! उसका निवार्ण करने को। गुरुकुल के आचार्यों की शरण लो। वहां तुम्हें हर समस्या का समाधान मिलेगा।

तुम जब भी आना अपने साथ श्रद्वा, प्रेम, भक्ति और विश्वास अवश्य लाना, भूल नहीं जाना। हमारे आचार्य यही शुल्क लेते हैं। बिना इनके तुम्हें वहां उनसे कुछ भी नहीं है, मिलने वाला। भारत माता के तन पर लिपटा हुआ वस्त्र तो ठोस है, घिसा नहीं है, मात्र कटा हुआ है। वह तो अब भी हर मौसम का सामना करने में सक्षम है। भारतीय शिक्षा अव्यवस्थित होते हुए भी किसी अन्य राष्ट्र की शिक्षा-प्रणाली की तुलना में अब भी कम नहीं, श्रेष्ठ ही है। ◆◆◆

आदरणीय पर्वतजन

...-जितेन्द्र नेगी

हम बचपन से लेकर अब तक हर वर्ष हिमाचल के जंगलों में आग लगने की घटनाओं के विषय में सुनते देखते आए हैं जिसमें लाखों की वन सम्पदा जीव जंतु तथा पर्यावरण को नुक्सान होता है। हम सड़कों किनारे लेख पढ़ते थे, सरकार द्वारा वन हमारे पुरखों की सम्पत्ति है इसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है हम सोचते थे हमारा हिमाचल तो इस नासूर समस्या से छुटकारा मिल जाएगा पहाडों के सूखते जल स्रोतों के कारण होते पलायन, घटते वन्य जीव प्राकृतिक आपदाएं व पर्वतीय संस्कृति के पतन के कारण हमारी वन सम्पदा घटती जा रही है। उत्तराखंड बनने के बाद की विदेशी मानसिकता वाली सरकारों ने विकास के नाम पर वनों का कटान सड़कों के नाम पर तरुण पहाड़ों का कटान आमदनी हेतु तीर्थ स्थलों को पर्यटक स्थल बना दिया प्लास्टिक संस्कृति को बढ़ावा तथा हमारे संसाधनों, व्यवसायों में बाहरी हस्तक्षेप का बढ़ना तेज हुआ है। भारत में सैकड़ों राजनीतिक दल है। कोई जाति वाली पार्टी कोई भाषा वादी कोई राष्ट्रवादी कोई परिवार वादी आदि ऐसे ही इन्हें वोट देने वाले समर्थक न तो इनके घोषणा पत्र में जंगल, जल पर्यावरण संरक्षण का कोई मुद्दा होता है न इनके समर्थक कहते हैं। हमने देखा व पढ़ा हमारा उत्तराखण्ड भारत का सबसे आत्मनिर्भर राज्य हुआ करता था। नमक के अतिरिक्त सब यहां उपलब्ध था। सरकारें लिखती हैं जल ही जीवन है। मैं कहता हूं 'जंगल है तो जल है। जल है तो जीवन है।' अज्ञानी तु जीवित है गीता में कृष्ण जी कहते हैं अज्ञानी लोग वनों का नाश अपनी स्वार्थ लालसा के लिए तब तक करते हैं जब तक वन सम्पदा समाप्त न हो जाए किन्तु ज्ञानी लोग प्रकृति में वनों के महत्व को समझते हैं, वो वनों का प्रयोग अपनी लालसा के लिए नहीं करते वैज्ञानिक धरती छोड़ मंगल ग्रह में जीवन ढूंढ रहे हैं। सचिव, मंत्री एसी कमरों, कारों में बैठकर पर्यावरण के बदलते स्वरूप पर चर्चा कर रहे हैं। देश में गर्मी आते ही चारों ओर जल संकट के कारण पशु-पक्षी मानव जीवन संकट में पड़ जाता है। पहाड़ों में वन सम्पदा नष्ट हो जाने के कारण भूस्खलन आम बात है। पहाड़ों में गर्मी आते ही पर्यटकों की भरमार हो जाती है। सरकार को अच्छी खासी आमदनी भी हो जाती है। सरकार ये नहीं सोचती कि पर्यटक यहां शहरों के प्रदूषण से जो पेडों के न होने के कारण हुआ है उससे छुटकारा पाने के लिए पहाड़ों की शरण में आता है। ◆◆◆

पर्यावरण सरंक्षण

पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के पोषण के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनुपम भेंट है। वह हर चीज जो हम अपने जीवन जीने के लिए इस्तेमाल करते हैं वे पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं जैसे- पानी, हवा, सूरज की रोशनी, भूमि, पौंधे, जानवर, जंगल और अन्य प्राकृतिक चीजें। हमारा पर्यावरण पृथ्वी पर स्वस्थ जीवन का अस्तित्व बनाये रखने में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, आधुनिक युग में हमारा पर्यावरण मानव निर्मित तकनीकी उन्नति के कारण दिन ब दिन बद्तर होता जा रहा है। इस प्रकार, पर्यावरण प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या बन गयी है जिसका हम आज सामना कर रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक और बौद्धिकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। पर्यावरण का दूषितकरण कई रोगों का जनक है। हमें पर्यावरण को बनाए रखने के लिए सजग होकर अपनी गलतियों को सुधारना होगा। ◆◆◆

शुभकामनाओं सहित

मातृवन्दना के सभी पाठकों को रजत जयंती वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाईयां

प्रदेश के सभी खंड में डीलरों की आवश्यकता है। कृपया संपर्क करें:
70182-17700
महेंद्र कपूर

बढते हुए बिजली के बिल की वजह से सोलर वॉटर हीटर लगाया और मेरा पैसा 3 सालों वसूल हो गया!

टोल फ्री 1800 233 4545
SMS : SOLAR to 58888
समझदारी की सोच!
Sudarshan Saur®

कचरे से खुले सफलता के द्वार

... -आदित्य भारद्वाज

किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए मेहनत के साथ जोखिम भी उठाना पड़ता है। बेंगलुरू के एक नामी इंजीनियरिंग कॉलेज से केमिकल इंजीनियरिंग में टॉप करने वाली निवेधा ऐसी ही एक जीवट युवा इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में आकर्षक वेतन पर नौकरी कर सकती थीं, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने मोटी तनख्वाह वाली नौकरी को ठुकरा दिया और एक नई राह चुनी। बेंगलुरू में रहने वाली निवेधा ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही तय कर लिया था कि उन्हें कुछ अलग करना है। देश में कचरा एक बड़ी समस्या है। बड़े शहरों में कचरा निस्तारण की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। निवेधा ने इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए सोचना शुरू किया। वह कुछ ऐसा करना चाहती थीं कि कम खर्च में कचरे का निस्तारण भी हो जाए और कुछ आमदनी भी हो सके। शुरूआत में कई बार उन्हें नाकामी हाथ लगी, पर उनका हौसला कम नहीं हुआ। उन्होंने कड़ी मेहनत के बाद बहुत सस्ते में, 'कचरा पृथक्करण उपकरण वेस्ट सेग्रीगेटर 'ट्रैशबॉट' तैयार कर लिया जो न केवल गीले और सूखे कचरे को अलग करता है, बल्कि उसकी रिसाइक्लिंग कर कमाई का जरिया भी बन रहा है। इस उपकरण का पेटेंट निवेधा के नाम है। उनकी इस मुहिम में उनके हर कदम पर साथ दे रहे हैं जोधपुर राजस्थान के सौरभ जैन। सौरभ ने इंजिनीयरिंग के बाद चार्टर्ड एकाउंटेंसी की पढ़ाई की और करोड़ों रूपये पैकेज की नौकरी ठुकरा कर उनके साथ जुड़ गए। निवेधा बताती हैं, 'कॉलेज में पढ़ाई के दौरान पास ही ऐसी गली थी, जहां कचरा पड़ा रहता था। दुर्गन्ध के कारण वहां से गुजरना मुश्किल होता था। एक दिन हमने पूरी टीम के साथ वहां का कचरा साफ कर दिया। हम खुश थे कि अब वहां कचरा नहीं है, लेकिन अगले एक सप्ताह बाद फिर वहां कचरे का अंबार लग गया। तब मन में यह विचार आया कि इस तरह से तो कभी कचरे से छुटकारा मिलेगा ही नहीं। इसका सबसे बड़ा कारण था- कचरे का अलग-अलग नहीं होना। अगर एक ही थैली में डायपर, प्लास्टिक कवर, उसके ऊपर सांभर, दाल, चावल और अन्य गंदगी भी हो तो उस कचरे को कौन हाथ लगाएगा? नगरपालिका भी कचरे को शहर से 50-60 कि.मी. दूर ले जाकर फेंक आती है। आज कचरा डंपिंग के लिए जगह कम पड़ती जा रही है। यह सब सोचकर मेरे दिमाग में विचार आया कि अगर कचरे को अलग-अलग किया जाए तो उसे रिसाइकल किया जा सकता है।'

शुरूआत में निवेधा ने घर-घर जाकर लोगों को गीला और सूखा कचरा अलग-अलग रखने के लिए समझाया, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने एक ऐसी तकनीक विकसित करने की ठानी जो एक ही थैले में रखे गीले और सूखे कचरे को अलग कर सके। ऐसी तकनीक विश्व में किसी देश में नहीं थी। निवेधा आज ट्रैशबॉट तैयार करने वाली कंपनी ट्रैशबॉट लैब्स प्राइवेट लिमिटेड की संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। वहीं, सौरभ सह-संस्थापक और मुख्य परिचालन अधिकारी हैं। ट्रैशबॉट शहर के किसी भी मोहल्ले में एक छोटी सी जगह में लगाया जा सकता है। यह 500 किलोग्राम से लेकर 2 टन और 10 टन क्षमता का है, जो एक घंटे में कचरे को पृथक कर रिसाईकल योग्य बना देता है। इसके प्रयोग से कचरा ढोने पर खर्च होने वाली करोड़ों की रकम बचाई जा सकती है।

गीले कचरे से बायोगैस आदि तैयार होती है, जबकि सूखे कचरे से बोर्ड आदि बनते हैं, जो कुर्सी, टाइल्स, सजावटी सामान या फर्नीचर आदि के निर्माण में काम आता है। बेंगलुरू, गुजरात और चेन्नई में ऐसे ट्रैशबॉट लगाए जा चुके हैं। ऐसा ही ट्रैशबॉट अयोध्या उत्तर प्रदेश में भी लगने वाला है। इसके अलावा मलेशिया, सिंगापुर, नेपाल सहित कई देशों ने इसके लिए ट्रैशबॉट टीम से संपर्क किया है।'◆◆◆

नशा है एक बुराई

नशा है एक बुराई
बचकर रहना मेरे भाई।
जिन्हें यह लत पड़ जाती,
जीवन उनका चट कर जाती।
समाज उन्हें है दुत्कारता,
है नहीं कोई स्वीकारता।
सूझता नहीं धरा-प्रकाश,
बुद्धि का भी होता नाश।
तन-मन का करे ह्रास,
बुराई भी कर जाती वास।
नशे ने कई घर उजाड़े,
नशे से गए कई लताड़े।
नशा-निवारण स्वच्छता अभियान,
मिलकर गाओ सुन्दर गान।
नशेड़ी नहीं कुछ कर पाए,
व्यर्थ अपना जीवन गवाएं।
रहो नशे से तुम नित दूर,
उंचे बनो तुम पेड़ खजूर।
कहे 'प्रसाद' नशा बुरा है,
इसका मारा कौन ऊबरा है?

रामप्रसाद शर्मा, प्रसाद सिहाल
(कांगड़ा) हि०प्र०

कसम हिंदोस्तान की

नजर तो कई लगाए बैठे हैं,
हिन्द की सुन्दरता पर,
लाजमी है क्या! सोने की चिड़िया को घूरना,
बरदाशत् से बाहर है अब सहना हमलों को,
आतंक फैलता जा रहा,
भारत को खून से दिया नहा,
लाशें जो बिछी हिंदुस्तान की धरा पर
जुर्म की बुनियादों को तोड़,
खोखला कर पवित्र भूमि को,
छा जाएगी दरिंदगी धरती पर
आखिर क्यों करना चाहते हैं तबाह,
तब क्यों न याद आता भगवान
असुरों का राज फिर होने लगा,
यह तो प्रकृति से दगा है,
सूरज डूब गया है,
रोशनी बुझा गया है,
भारत का गरूर सिमट गया है,
भारतीयता का नाज खो गया है।
शिखर उंचाइयों का बिखर गया है,
आतंकवाद से सिकुड़ कर रह गया सब
बारी है जवाब देने की अब,
यह भी न समझना,
कि शांन्तिप्रिय हैं हिदुस्तानी
आएगी जब भी भारत मां पर आंच,
कसम हिंदोस्तान की,
हर हिंदोस्तानी सुनाएगा कहानी बलिदान की
''भारत माता की जय''

सागरिका महाजन, खुशीनगर, नूरपुर

90 प्रतिशत की भारी सब्सिडी पर धान बीज एवं बीजोपचार हेतु दवा लें

धान बीज एवं बीजोपचार हेतु दवा पर सब्सिडी खरीफ फसल में धान एक महत्वपूर्ण फसल है। इसकी खेती उत्तर से दक्षिण भारत में होने के कारण महत्व बढ़ जाता है। इसकी खेती उन स्थानों पर अधिक होती है जहाँ सिंचाई का साधन उपलब्ध हो। सही मात्रा में सिंचाई का नहीं मिल पाना तथा नए बीज के कारण फसल पर रोग तथा कीट का प्रकोप अधिक हो गया है। जिसके कारण किसान को रासायनिक कीटनाशक का प्रयोग करना पड़ता है। किसान अगर बीज की बुआई के पहले बीजों का बीजोपचार कर दे तो फसल पर लगने वाले रोग से छुटकारा पाया जा सकता है लेकिन समस्या यह है की बीजोपचार के लिए रासायनिक दवा का प्रयोग किया जाता है। जो सभी किसानों के लिए सक्षम नहीं है। बिहार सरकार प्रदेश के किसानों को धान की खेती के लिए बीज के साथ बीजोपचार की दवा भी दे रही है। इसकी पूरी जानकारी इस प्रकार है।

अब इन किसानों का होगा 1 लाख रुपये तक का कर्ज माफ क्या है योजना वित्तीय वर्ष 2019 ख्र 20 में फसल सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बीज टीकाकरण अभियान का कार्यान्वयन राज्य के सभी प्रखंडों में चलाया जा रहा है इस कार्यक्रम के अंतर्गत खरीफ फसलों जैसे धान के बीजोपचार करने हेतु बीज टीकाकरण वाहन द्वारा बीजोपचार रसायन एवं जैव कीटनाशियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है बीजोपचार हेतु आवश्यक रसायनों एवं जैव कीटनाशियों पर 90 प्रतिशत अनुदान भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक वाहन पर एक तकनीकी पदाधिकारी तथा चयनित कीटनाशी प्रतिष्ठान का एक प्रतिनिधि बीजोपचार रसायन जैव कीटनाशी एवं फोरमेन ट्रैप के साथ वाहन में मौजूद रहेंगे। तकनीकी पदाधिकारीयों एवं इससे होने वाले लाभों के संबंध में अवगत करायेंगे। टीकाकरण वाहन पर मौजूद लीफलेट एवं पम्फलेट का वितरण किसानों के बीच करते हुये लाउडस्पीकर से भी प्रचारित कर किसानों को जागरूक किया जायेगा।

◆◆◆

ऐसा करेंगे तो नहीं देना होगा किसान पेंशन योजना के लिए प्रीमियम

किसान पेंशन योजना नई सरकार की सबसे बड़ी योजना किसान पेंशन योजना है। इस योजना के तहत देश के लघु एवं सीमांत किसान को 60 वर्ष की उम्र के बाद मासिक 3,000 रूपये की पेंशन दी जाएगी। सरकार ने यह योजना जारी करते हुये बताया था की अगले 3 वर्ष में इस योजना से लगभग 5 करोड़ किसान जुड़ेंगे तथा इससे लगभग 10,770 करोड़ रूपये का सरकार पर बोझा आएगा। योजना में राज्य तथा केंद्र सरकार की समान रूप से भागीदारी है। इस योजना का प्रीमियम तीन क्षेत्रों में बंटा हुआ है। एक भाग किसान देगा तथा उतना ही केंद्र तथा राज्य सरकार प्रीमियम का भुगतान करेगा। इस योजना में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की किसान का प्रीमियम का भुगतान कैसे होगा तथा कितना होगा। इसकी पूरी जानकारी किसान समाधान लेकर आया है। किसान पेंशन योजना में कौन शामिल होगा? इस योजना के अंतर्गत देश के सभी किसान लघु एवं सीमांत के साथ-साथ उम्र 18 वर्ष से 40 वर्ष के बीच होगा। यह उन सभी किसानों के लिए भी है जिनके पास भूमि है या नहीं है। 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि वाले किसानों को इस योजना में शामिल नही किया गया है। अगर किसी किसान की उम्र 29 वर्ष से कम तथा 18 वर्ष से ज्यादा है तो उसका प्रीमियम कम लगेगा और 29 वर्ष से ज्यादा है तो उसका प्रीमियम ज्यादा लगेगा। लेकिन सरकार की तरफ से यह नहीं बताया गया है की 29 वर्ष से कम आयु वाले किसान का प्रीमियम कितना होगा तथा 29 वर्ष से ज्यादा उम्र वाले किसान का प्रीमियम कितना होगा। केंद्रीय कृषि मंत्री ने 1 जून

को एक महत्वपूर्ण फैसला लेते हुये सभी राज्यों के कृषि मंत्रियों को निर्देश किया है की जिस किसान को पीएम-किसान के तहत पैसा आएगा अगर वह यह चाहता है की उसका पैसा उस योजना का माध्यम से किसान पेंशन योजना का प्रीमियम के रूप में दिया जाए तो ऐसा किया जाए। इसका मतलब यह हुआ की किसान को अलग से प्रीमियम नही देना होगा बल्कि पीएम-किसान में दिया हुआ वर्ष का 6,000 रूपये में से ही किसान पेंशन का पैसा दिया जायेगा। ◆◆◆

अनूठी-औषधीय वनस्पति एलोविरा (ग्वारपाठा)

भारतवर्ष में जड़ी-बूटियों और नाना प्रकार की वनस्पतियों का भण्डार है जिनका युक्ति पूर्वक सही विधि द्वारा प्रयोग बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होता है। ग्वारपाठा जिसे घी गुवार, घी कुंआर, घृतकुमारी आदि नामों से पुकारा जाता है, यह सारे भारत में पैदा होने वाली वनस्पति है। यह गांव बाहर खेतों या बाग बगीचों की बागड़ में, नदी किनारे या पगडण्डी के किनारे पैदा होती है इसलिए आसानी से उपलब्ध रहती है यह पौष्टिक भी होती है और कई व्याधियों को नष्ट करने वाली भी होती है। इसके रस को सुखाकर एक पदार्थ बनाया जाता है। जिसे कुमारी सार या एलवा या 'मुसब्बर' कहते हैं। यह सार कई प्रसिद्ध आयुर्वेदिक योगों का प्रमुख घटक द्रव्य होता है।

गुण एवं उपयोगिता- भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार यह दस्तावर, शीतल, नेत्रों के लिए हितकारी, रसायन, मधुर रस युक्त, पौष्टिक बलवीर्यवर्द्धक तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा व यकृत के विकार, अण्डवृद्धि, कफ ज्वर, ग्रन्थि, अग्निदाह, विस्फोट, रक्त पित, रक्त विकार और त्वचा रोग आदि विकारों को दूर करने वाली वनस्पति है। सर्व सुलभ ग्वारपाठा अत्यन्त ही उपयोगी औषधि है। इस हेतु इसके पतों के मध्य का गूदा उपयोग में लाया जाता है जो कि मीठा, कडुआ, शीतल, विरेचक, पिच्छिल तथा चिकना होता है। कडुआ व तिक्त होने से यह कफ-पित का नाश करता है, दर्द को दूर कर घाव को जल्दी भरने वाला होता है।

यदि इसका सीमित मात्रा में सेवन किया जाए तो यह रामबाण औषधि की तरह कार्य कर भूख बढ़ाकर भोजन को पचाने वाला, यकृत को क्रियाशील करने वाला तथा मल को बाहर निकालने वाला सिद्ध होता है। यह पेट के कीड़ों को नष्ट करने वाला है। आयुर्वेद के अनुसार सीमित मात्रा में इसका प्रयोग निर्भयता के साथ किया जा सकता है और समशीतोष्ण होने के कारण सभी ऋतुओं में इसका प्रयोग किया जा सकता है। ◆◆◆

चमकी ज्वर का होम्योपेथी से उपचार

बिहार के मुजफ्फरपुर में लींची फल खाने के कारण चमकी बुखार से 165 बच्चों की मौत हों चुकी है । इस ज्वर से लड़ने के लिए एलोपैथिक दवाएं लगभग बेअसर साबित हो रही हैं। इस पर होमियोपैथिक डाक्टर अभय कुमार ने बताया कि चमकी बुखार के ईलाज के लिए होमियोपैथिक पद्धति कामयाब हुई है। होमियोपैथ की बैप्टिसिया-30 तथा हायोसाईमश-30 प्रतिघंटे एकांतर क्रम से दो-तीन बूंद हर बार दें। चार-पॉच घंटे में ज्वर उतर जायेगा ! ... यदि ईलाज में कुछ देर हो गई हो और बच्चे के प्राण संकट में हो तो जेल्सिमियम-30 को 15-15 मिनट पर देने से 4-5 खुराक से ही बच्चे को जीवन दान मिल जायेगा ! यदि चमकी बुखार को कोई केस अपने आस-पास नजर आये तो एक अच्छे होम्योपैथिक चिकित्सक से मिलें। ◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
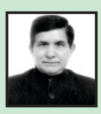
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

आखिर NRC है क्या ?

NATIONAL REGISTER OF CITIZENS

असम में 50 लाख बंग्लादेशियों की शिनाख्त पूरी, मीडिया के मातम का इंतज़ार

असम से पचास लाख बंग्लादेशी मुसलमानों को वापस भेजने की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश में ऐसे लोगों के वैरिफिकेशन के प्रोसेस का दूसरा चरण पूरा हो चुका है और लगभग पांच मिलियन लोगों के पास कोई भी दस्तावेज़ या सबूत नहीं हैं जिससे ये साबित हो कि वो भारत में 1971 के पहले से रह रहे हैं। वोटबैंक की राजनीति के तहत घुसपैठियों, और कई बार आतंकियों को पनाह देकर आधार और राशन कार्ड बांटने वाली सरकारों की ग़ैरक़ानूनी नीतियों पर इसके बाद शायद रोक लगे। जून तक फ़ाइनल रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को जानी है, फिर इन्हें वापस अपने देश रवाना किया जाएगा।

राज्यों की डेमोग्राफी को बदलने की कोशिश में ही घुसपैठ को प्रश्रय दिया जाता रहा है, ताकि इनकी पार्टियां सत्ता में ऐसे मुसलमान वोटरों से बनी रहें, देश के संसाधानों के दुरुपयोग से लेकर सुरक्षा व्यवस्था के लिए चुनौती बने इन बंग्लादेशियों को वापस भेजना बहुत जरूरी है। हम कनाडा या ऑस्ट्रेलिया नहीं हैं जहां अथाह संसाधान हैं, और लोग कम हैं। हमारे पास संसाधान भी कम हैं, और जनसंख्या पहले से ही ज़्यादा है। अब आपको कुछ ऐसी ख़बरें मिलेंगी जिनको इस हिसाब से लिखा जाएगा मानो फ़लांआदमी के पास के दस्तावेज़ आग में जल गए थे, कोई धर्म के नाम पर सताया जा रहा है आदि। ऐसे मानवीय संवेदनाओं से भरी कहानियां कहने वालों में बीबीसी हिन्दी, वायर, स्क्रॉल, क्विंट और एनडीटीवी जैसी अजेंडाबाज साइटें होंगी। कहानी शुरु होगी कि नूर के छः बच्चे हैं, पति मर चुका है, और उसका कहना है कि वो हमेशा से असम में ही रहे हैं। उसके बेटे को ग़ालिब बहुत पसंद है, और वो कविता करता है। छोटा लड़का तीसरी क्लास में है और गणित में बहुत बढ़िया है। जब तक रिपोर्टर नूर से बात कर रहा था, मासूम-सी मुस्कान लिए नूर की बिटिया ने उन्हें चाय बनाकर दी जिसे पीकर रिपोर्टर ने तय किया कि इससे बेहतर चाय उसने कभी पी ही नहीं।

आगे रिपोर्ट में ये बताया जाएगा कि जब से भाजपा सरकार आई है, एक ख़ौफ़ का साया है। पुलिस रात-बेरात कभी भी उनसे पूछताछ करने आ जाती है। नूर के चेहरे पर एक डर को देखा जा सकता था। बड़ा बेटा बारहवीं में है और डॉक्टर बनना चाहता है। उसकी तमन्ना है कि वो अपनी मातृभूमि और समाज में योगदान दे। लेकिन वो ऐसा शायद नहीं कर पाए क्योंकि जल्द ही अपने जैसे कई परिवारों की तरह नूर और उसके बच्चों को ज़बरन किसी वैसी जगह पर भेज दिया जाएगा, जिसे उन्होंने कभी देखा नहीं। उनके लिए तो भारत ही उनका देश था, मातृभूमि थी। आगे रिपोर्टर अंतिम पैराग्राफ़ में बताएगा/बताएगी कि मानवीय संवेदना दक्षिणपंथी सरकारों के फासिस्ट अजेंडे में फ़िट नहीं बैठता और धर्म के नाम पर शिनाख्त करके लोगों को सताना किसी भी सुपर पावर बनने की चाहत रखने वाले देश के लिए सही नहीं। आप पढ़ेंगे और शेयर करेंगे क्योंकि आप संवेदनशील हैं। हालांकि आपको ये पता नहीं होगा कि सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के निर्देश में कई स्तर के वैरिफिकेशन के बाद देश की सुरक्षा को नज़र में रखते हुए ये क़दम उठाए हैं। ◆◆◆

...-डॉ. अर्चना गुलेरिया

समूह में खेती कर महिलाएं कर रही हैं बड़े बदलाव

महिला सशक्तिकरण

प्राचीन काल में भारत में नारियों को उच्च स्थान प्रापत था। वे केवल संतान पैदा करने और रसोई घर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि पुरूषों के समान ही सामाजिक, राजनीनितिक और धार्मिक क्षेत्रों में भाग लेती थी। वेदों में बार-बार स्त्री की शक्ति का वर्णन किया गया है। शास्त्रों और मनुस्मृति में जहाँ एक स्त्री के जीवन की मर्यादायें निश्चित की गई है, वहीं स्त्री शक्ति और उसकी महत्ता को भी स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया गया है।

आज के सदर्भ में जब विश्व की आधी आबादी पुरूषों की हो तो महिला सशक्तिकरण में उनकी भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों के परिवारों में आज भी पुरूष प्रभाव दिखाई देता है और परिवारों में उनके निर्णय की ही प्रधानता रहती है। ऐसे में महिलाओं के जीवन स्तर को ऊपर उठाने तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का कोई प्रयास पुरूषों की भागीदारी व सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता । इतिहास साक्षी है कि राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे महान समाज सुधारकों ने ही नारी उद्धार की दिशा में पहल की थी जो उनके परिवार से ही प्रारम्भ हुई थी और सारे समाज में मिसाल के रूप में रखी गई।

देश की आधी जनसंख्या नारी है, यदि वह पक्ष दुर्बल बनकर रहेगा तो नर के रूप में शेष आधी आबादी की शक्ति इस कमजोर दीनहीन पक्ष का भार ढोने में ही नष्ट होगी। प्रगति तो तभी सम्भव है जब गाड़ी के दोनों पाहिए साथ-साथ आगे की ओर बढ़ें। उस सत्य को वर्तमान समाज समझ रहा है और उसकी सोच एवं कार्यशैली में परिवर्तन आ रहा है यद्यपि यह प्रयास मात्रा में बहुत कम है । लिंग समानता को आधार बनाकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिला पुरूष संघर्ष की समाप्ति एक मील वर्गो की सकारात्मक भागीदारी शान्ति, सहयोग और सहनशीलता जरूरी है। जिन देशों में ऐसी स्थिति है वहाँ स्त्री पुरूष दोनों की उन्नति हो रही है, जीवन तनावमुक्त हो रहा है। पुरूष वर्ग की बदलती मानसिकता के कारण ही महिलाएं आज के दौर में रात में काम करने का साहस व अधिकार पा सकती हैं। पुरूषों के प्रयासों से ही वे शिक्षित होकर, उनकी रूचि के अनुसार परिवार को सहेजते हुए अपना मापदण्ड स्वयं तय कर रही हैं। सामने आने वाली चुनौतियों का साहस एवं विवेक के द्वारा सामना कर रही है। आज पूरे विश्व में शन्ति, प्रेम, सुरक्षा और संगठन की मांग है। जीवन को शन्तिपूर्वक ढंग से जीने के लिए आस्था चाहिए, निष्ठा चाहिए। समर्पण का संस्कार चाहिए, सदभावना और सौहार्द चाहिए, जिनका सदुपयोग समाज संगठन में, राष्ट्र निर्माण में भली प्रकार किया जा सकता है। अतः पिता, पति भाई, चाचा ताया का कर्त्तव्य है। कि वे पुत्री को विकास के समान अवसर दें। रूढ़ियों और कुरीतियों की धूल को झाड़कर बेटियों को आगे बढ़ने का साहस प्रदान करें। माताओं और पत्नियों के संस्कार का असर पुरूष समाज में स्वतः ही बड़ेगा। पुरूष की मानसिकता में आया बदलाव वक्त की माँग है जिसे पुरूषों को आज नहीं तो कल स्वीकार करना ही होगा। इसी में उसकी सज्जनता, दूरदर्शी बुद्धिमानी का परिचय मिल सकता है। यदि आज की नारी शिक्षित, स्वस्थ, स्वावलम्बी व जगारुक होगी तभी भविष्य सशक्त हो सकेगा। दोनों की सहभागिता खुद व खुद सफलता और समृद्धि का द्वार खोलने का सामर्थ्य रखती है। इसी में उसका स्वार्थ और परमार्थ जुड़ा हुआ है। आज के दौर में महिला सशक्तिकरण तथा नारी मुक्ति आंदोलन एक उफनती नदी बन चुका है जिसकी धारा को पहचान कर तैरना बेहतर हैं। यदि उसका विरोध होगा तो वह धारा प्रत्येक बाधा को ध्वस्त कर बहने पर मजबूर हो जाएगी। ◆◆◆

आज़ाद ही जिएंगे ही मरेंगे

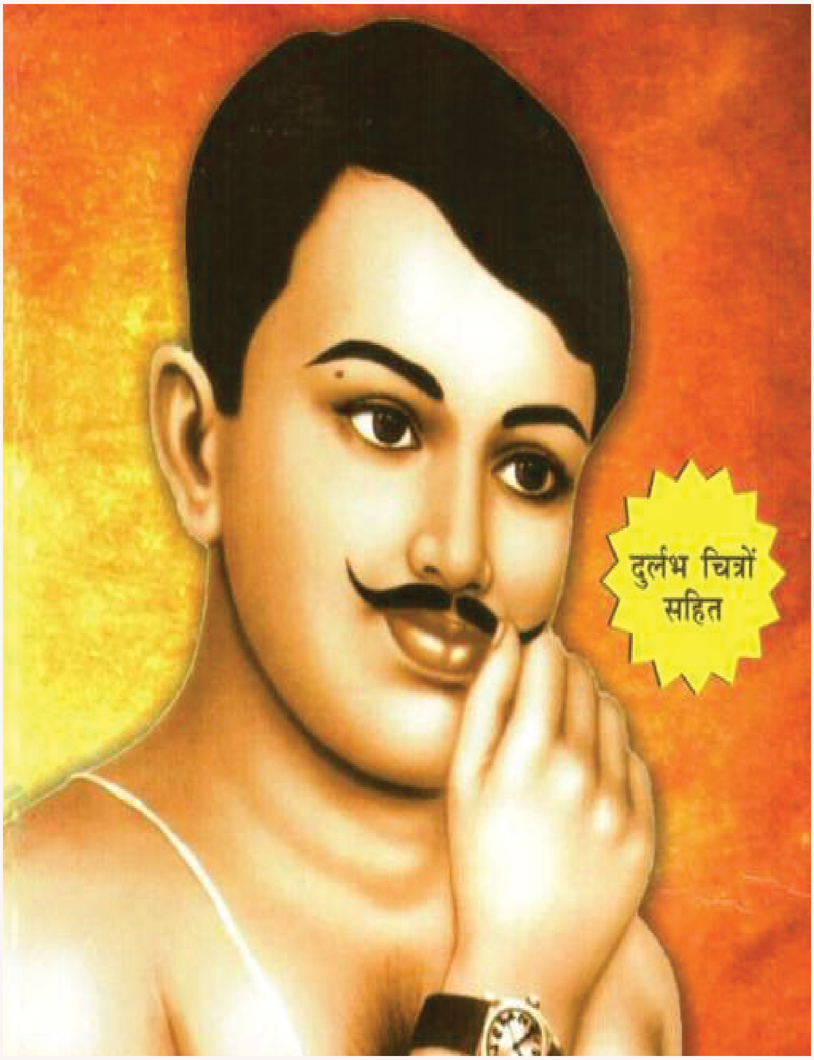

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के बदरका गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम जगरानी देवी और पिता सीताराम तिवारी के परिवार का नाम इस बालक ने आगे बढ़ाया। भारत की पराधीनता के विरूद्ध क्रांन्ति की चिंगारी चन्द्रशेखर के बचपन में दिखाई देने लगी। मातृभूमि पर अपना सर्वस्व समर्पण करने की दृढ़ आस्था ने आजादी के दीवाने को 'आजाद' नाम दे दिया। अंग्रेज शासन को उखाड़ ंेंकने का एक मात्र लक्ष्य उनके जीवन का मूलमंत्र था। चन्द्रशेखर आजाद का हृदय विशाल होने के कारण विपरीत परिस्थितियों के आगे कभी नहीं झुका। बड़ी से बड़ी आपदा में धैर्य गहरा और साहस विराट हो जाता था। इस तरूण तपस्वी ने अपना पूरा जीवन देश सेवा में ही लगाया।

क्रांतिकारियों के सिरमौर चन्द्रशेखर 'कमांडर इन चीफ इंडियन रिपब्लिकन आर्मी, नाम से सुप्रसिद्ध थे। देश को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के सामने अपने जीवन के लिए उन्हें कोई कामना नहीं थी। अगणित गाथाओं का इतिहास उनके बाल्यकाल में समाहित है। गणेश शंकर विद्यार्थी के दैनिक प्रताप के साथी और आजाद की सेना के क्रान्तिकारी परस्पर विनोद कर रहे थे। 'कौन कैसे पकड़ा जाएगा' विषय पर हो रही वार्ता में भगत सिंह ने हंसते हुए कहा कि-'पंडित जी' आपके लिए दो रस्सों की आवश्यकता पड़ेगी।

एक आपके गले के लिए और दूसरा आपके भारी पेट के लिए'। आजाद ने तपाक से हंसकर कहा कि 'फांसी चढ़ने का शौक हमें नहीं है। वह तुम्हें ही मुबारक हो। जब तक ब्लैक माउजर पिस्तौल मेरे पास है, किसने माँ का दूध पिया है, जो मुझे पकड़े।' एक बार बंदी बनाए जाने पर बालक चन्द्रशेखर ने मजिस्ट्रेट द्वारा पूछे जाने पर अपना नाम 'आजाद' पिता का नाम स्वाधीन घर और पता जेलखाना बताया था। एक दिन कानपुर रेलवे स्टेशन पर उन्हें पकड़ने के लिए पुलिस के बड़े अनुभवी अधिकारी जमे थे।

तभी एक सिपाही की दृष्टि जैसे ही चन्द्रशेखर पर पड़ी वे बोल उठे-'तुम अपना काम करो हम अपना काम करें।' उनके हाथ में एक पस्तौल थी। इसके बाद सभी जड़वत हो गए, आजाद चक्रव्यूह भेदन कर आगे बढ़ गए। काकोरी कांड के बाद चन्द्रशेखर लगभग तीन वर्ष तक फरारी की दशा में झांसी में रहे। लाहौर केस के अनन्त आजाद ने बचे साथियों के साथ दल का कार्य शुरू किया। सालिगराम शुक्ल, भगत सिंह और सुरेन्द्र का संदेश चन्द्रशेखर तक पहुंचाते थे। आजाद का जीवन 'आजाद ही जिएंगे, आजाद ही मरेंगे' पर अवलंबित था। इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज सैनिकों से घिरे आजाद ने 27 फरवरी 1931 को अपनी ही गोली से प्राणोत्सर्ग कर शहीद हो गए।

एक दिव्य युग का अंत

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

एक दिव्य युग का अंत !!
आध्यात्मिक जगत के दैदीप्यमान सूर्य का अवसान !!
अत्यंत व्यथित हृदय से सूचित कर रहें हैं कि भारत माँ के परमआराधक, निवृत्त-जगद्गुरू शंकराचार्य,पद्मभूषण पूज्य गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज आज प्रातः 25 जून मंगलवार में अपना पाञ्चभौतिक शरीर त्यागकर ब्रह्मलीन हो गये हैं। कल भारत माता जनहित ट्रस्ट के राघव कुटीर के आँगन में समाधि दी जाएगी।
समय : सायंकाल ४ बजे
दिनांक : 26 जून, बुधवार 2019
समन्वय सेवा ट्रस्ट , भारत माता मंदिर हरिद्वार
भारत माता जनहित ट्रस्ट ,
स्वामी सत्यमित्रानंद फॉउन्डेशन

मज़दूर नेता का अवसान

दुर्भाग्यवश 1947 में भारत का विभाजन हो गया तब प्यारे लाल बेरी अमृतसर में ही कार्य कर रहे थे। पाकिस्तान से भारत आने वाले लोगों के ठहराने, भोजन की व्यवस्था तथा उनको गंतव्य तक पहुंचाने के लिये बनी 'पंजाब रक्षा समिति' के आप भी सदस्य थे। अमृतसर में मुस्लिमों द्वारा पाकिस्तान जाने के समय खाली किये गये घरों में, पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू-सिख शरणार्थियों को बसाने का काम भी आपके जिम्मे लगा हुआ था।

1955 ई. में भारतीय मजदूर संघ शुरू हुआ। संस्थापक दत्तोपंत ठेंगड़ी की प्रेरणा से 1955 ई. में ही भारतीय मजदूर संघ में कार्य करना आरंभ किया। 1960 ई. में भारतीय मजदूर संघ में संगठन मंत्री बनने का निर्णय लिया। 1957 ई. में पंजाब महाअंदोलन के समय आप 6 महीने फिरोजपुर जेल में रहे। 1974 ई. में मजदूर

हितों के लिए रेलवे में बड़ी हड़ताल हुई जिसमें आपका बहुत बड़ा सहयोग था। इसी कारण आपको चंडीगढ़ से शिमला जाते समय कालका में गिरफ्तार कर लिया गया। आपको अंबाला जेल में रखा गया। आपके साथ शांता कुमार भी जेल में रहे जो बाद में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। आपातकाल खत्म होने पर भी आपको बड़े मजदूर नेता होने के कारण रिहा नहीं किया गया। 1977 ई. में चुनाव होने के पश्चात् तथा सरकार बनने के बाद ही आपको रिहा किया गया। 1980 ई. में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I.L.O.) के जिनेवा, स्विट्जरलैंड अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आप भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि बन शामिल हुए। वापसी में आप यूनान भी प्रवास पर गए। 1989 ई. में आप पुनः अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन I.L.O. के फ्रांस में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए। वापसी में आपका प्रवास के दौरान पैरिस भी जाना हुआ। आपने 1987 ई. से 1992 ई. तक भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय सचिव तथा क्षेत्रीय संगठन मंत्री के नाते दायित्व का निर्वहन किया। 1992 ई. तक आप भारतीय मजदूर संघ में सीधे दायित्व पर कार्यरत रहे। 1992 से 1997 तक आप अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन I.L.O. से भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के तौर पर संवाद करते रहे। 1997 ई. में आप विश्व संवाद केन्द्र पंजाब के प्रमुख बने। मज़दूर संघ हि.प्र. की ओर से स्व. प्यारे लाल बेरी के देहावसान के पश्चात् शिमला के लक्कड बाजार स्थित सफाई कर्मचारी संघ कार्यालय में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इस सभा में हि.प्र. के मजदूर संघ के कार्यकर्ता व अन्यगणमान्य जन भी उपस्थित रहे।◆◆◆

... -डॉ. जगदीश गांधी

ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस के स्कूलों में यौन शिक्षा दिये जाने के दुष्परिणामों से ये देश जूझ रहे हैं। विश्व भर में महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं और ब्रिटेन में तो यह आंकड़ा बेहद चौकाने वाला है। ब्रिटेन की संसदीय समिति ने एक रिपोर्ट पेश की है जिसमें इस बात का खुलासा हुआ है कि यहां स्कूल और कालेज जाने वाली आधी से अधिक लड़कियां यौन उत्पीड़न का शिकार हुई हैं। रिपोर्ट में स्कूलों में यौन शिक्षा दिए जाने की जरूरत पर जोर दिया गया है। ब्रिटेन के माध्यमिक स्कूलों में वर्तमान पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा अनिवार्य है। हमारा मानना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर मनुष्य की ओर से अर्पित की जाने वाली समस्त सम्भव सेवाओं में से सर्वाधिक महान सेवा है- बच्चों की उद्देश्यपूर्ण शिक्षा, उनके चरित्र का निर्माण तथा उनके हृदय में परमात्मा की शिक्षाओं को जानकर उन पर चलने का बचपन से अभ्या[illegible]राना न कि स्कूलों में यौन शिक्षा देकर बच्चों को तन तथा मन का रोगी बनाना।

आधुनिकता के नाम पर भारत में भी पांव पसार रही हैं समस्याएं:- विश्व के अनेक देशों में टी.वी. चैनलों एवं समाचार पत्रों में आधुनिकता के नाम पर युवक-युवतियों द्वारा बिना विवाह के लिव-इन-रिलेशन में साथ रहने के कारण युवतियों के गर्भवती होने व भ्रूण हत्या करवाने आदि की घटनाऐं लगातार सामने आती जा रहीं हैं। हमारा मानना है कि बच्चों की मन: स्थिति का सही आकलन किये वगैर बाल एवं युवा पीढ़ी को यौन शिक्षा देकर उनके मन-मस्तिष्क एवं चरित्र को पूरी तरह से नष्ट करने की तैयारी की जा रही है।

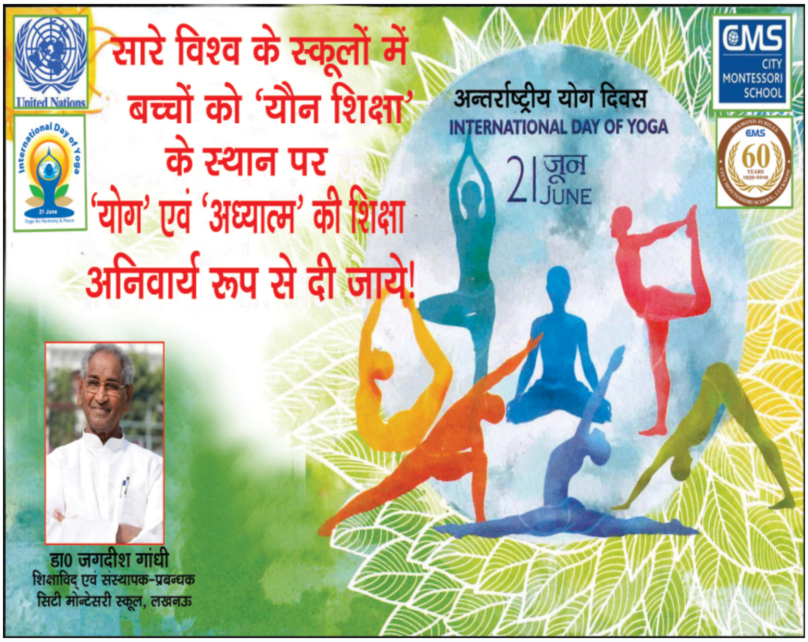

बच्चों को योग एवं अध्यात्म का ज्ञान दें:- परमात्मा ने मनुष्य और पशु में चार चीजें आहार, निद्रा भय व मैथुन तो समान रूप से दी है किन्तु उचित-अनुचित व गलत-सही का निर्णय करने की क्षमता केवल मनुष्य को ही दी है। यह क्षमता पशु में नहीं है। इसलिए बालक को योग तथा आध्यात्मिक ज्ञान कराने से उसके मस्तिष्क में ईश्वरीय दिव्य प्रवृत्ति पैदा होती है। किन्तु यदि उसे योग तथा आध्यात्मिक ज्ञान न हो तो उसके अंदर पशु वृत्ति बढ़ जाती है और तब मनुष्य उचित-अनुचित व गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता है और मनुष्य का आचरण पशुवत् हो जाता है। योग और आध्यात्म दोनों ही मनुष्य के तन और मन दोनों को सुन्दर एवं उपयोगी बनातें हैं। योग के मायने हैं जोड़ना। योग मनुष्य की आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। इसलिए हमारा मानना है कि प्रत्येक बच्चे को बचपन से ही योग एवं अध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए।

प्रत्येक बच्चे को बचपन से ही योग एवं अध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए :- हमारा यह सामाजिक उत्तरदायित्व है कि हम अभिभावकों के सहयोग से बच्चों को भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करें क्योंकि ऐसे बालक आगे चलकर स्वस्थ व सभ्य समाज की आधार शिला रखेंगे। इसलिए मेरा विश्व के सभी देशों से अनुरोध है कि वे जगतगुरू कहे जाने वाले इस देश की संस्कृति एवं सभ्यता को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालयों में बच्चों को अनिवार्य रूप से यौन शिक्षा की जगह योग एवं आध्यात्म की शिक्षा दें।

विद्यालय से बढ़कर जग में कोई ना तीरथ धाम :- हमारा मानना है कि विद्यालय ऐसा हो, जिसमें हो चरित्र निर्माण। बच्चों के कोमल मन को दे, मानवता का ज्ञान। तब होगा उत्थान जगत का, तब होगा उत्थान। आध्यात्मिक चेतना जगाये सबको सही दिशा दिखलायें। बच्चे बने प्रकाश जगत का मन में ज्ञान की ज्योति जलायें, क्योंकि - विद्यालय से बढ़कर जग में कोई ना तीरथ धाम। वास्तव में बच्चों को केवल योग एवं अध्यात्म की शिक्षा देने से ही संयम, सुचिता, स्व-अनुशासन, नैतिकता, चारित्रिकता तथा आध्यात्मिकता के गुण विकसित होंगे अन्यथा मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर जाने से रोका नहीं जा सकेगा। ◆◆◆

नई एजुकेशन पॉलिसी कमेटी ने सौंपा ड्राफ्ट

... -डॉ. अलोक कुमार

इस पॉलिसी का इंतजार करीब दो साल से हो रहा था और आखिरकार यह तैयार होकर मंत्रालय में आ गई है। पॉलिसी में सबसे ज्यादा फोकस भारतीय भाषाओं पर किया गया है। इसमें कहा गया है कि बच्चों को कम से कम क्लास पांच तक मातृभाषा में पढ़ाना चाहिए, साथ ही शुरू से बच्चों को तीन भारतीय भाषाओं का ज्ञान देना चाहिए। अगर विदेशी भाषा भी पढ़नी है तो यह चौथी भाषा के तौर पर हो सकती है।

तीन भारतीय भाषाएं सीखें

नई एजुकेशन पॉलिसी में कहा गया है कि बच्चों को प्री-प्राइमरी से लेकर कम से कम पांच वर्ष तक और वैसे आठ वर्ष तक मातृभाषा में ही पढ़ाना चाहिए। प्री-स्कूल और पहली क्लास में बच्चों को तीन भारतीय भाषाओं के बारे में भी पढ़ाना चाहिए जिसमें वह इन्हें बोलना सीखें और इनकी स्क्रिप्ट पहचाने और पढ़ें। तीसरी क्लास तक मातृभाषा में ही लिखें और उसके बाद दो और भारतीय भाषाएं लिखना भी शुरू करें। अगर कोई विदेशी भाषा भी पढ़ना और लिखना चाहे तो यह इन तीन भारतीय भाषाओं के अलावा चौथी भाषा के तौर पर पढ़ाई जाए।

प्राइवेट स्कूल की मनमानी पर भी लगाम

नई एजुकेशन पॉलिसी ड्राफ्ट में प्राइवेट स्कूलों की मनमाने तरीके से फीस बढ़ाने पर भी लगाम लगाने को कहा गया है। इसमें कहा गया है कि स्कूलों को फीस तय करने की छूट होनी चाहिए लेकिन वह एक तय लिमिट तक ही फीस बढ़ा सकते हैं।

इसके लिए महंगाई दर और दूसरे फैक्टर देख यह तय करना होगा कि वह कितने पर्सेंट तक फीस बढ़ा सकते हैं। हर तीन साल में राज्यों की स्कूल रेग्युलेटरी ऑथारिटी देखेगी कि इसमें क्या-क्या बदलाव करने हैं। फीस तय करने को लेकर राष्ट्रीय बाल आयोग भी पहले गाइडलाइन बना चुका है। उसमें भी यही कहा गया है कि महंगाई दर और दूसरे जरूरी फैक्टर के आधार पर तय हो कि प्राइवेट स्कूल कितनी फीस बढ़ा सकते हैं। बाल आयोग ने तो इसका उल्लंघन करने पर सख्त कार्रवाई के प्रावधान की भी सिफारिश की है।

बोर्ड एग्जाम का तनाव हो कम

पॉलिसी ड्रॉफ्ट में कहा गया है कि बच्चों में 10वीं 12वीं बोर्ड एग्जाम का तनाव कम करना चाहिए। इसके लिए उन्हें मल्टिपल टाइम एग्जाम देने का विकल्प दिया जा सकता है। स्टूडेंट को जिस सेमेस्टर में लगता है कि वह जिस विषय में एग्जाम देने के लिए तैयार है उसका उस वक्त एग्जाम लिया जा सकता है। बाद में स्टूडेंट को लगता है कि वह उस विषय में और बेहतर कर सकता है और उसे फिर से एग्जाम देने का विकल्प दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के गठन का प्रस्ताव पॉलिसी ड्राफ्ट में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग बनाने का भी प्रस्ताव है, जिसे प्रधानमंत्री हेड कर सकते हैं। साथ ही हायर एजुकेशन में अपने पसंद के विषय चुनने की ज्यादा छूट देने का भी प्रस्ताव है। इसमें लिबरल आर्ट में चार साल की बैचलर डिग्री शुरू करने का भी प्रस्ताव है। ड्राफ्ट में कहा गया है कि राइट टु एजुकेशन के तहत प्री प्राइमरी से लेकर 12 वीं तक सभी कवर हों। अभी यह पहली क्लास से आठवीं क्लास तक ही है। यह भी कहा गया है कि एजुकेशन पर ज्यादा फोकस करने के लिए मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय किया जाना चाहिए। सभी विषयों में भारत के योगदान को भी स्टूडेंट्स को पढ़ाना चाहिए। ◆◆◆

सूचना

इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।

मातृवन्दना पत्रिका में मई 2019 से मार्च 2020 के बीच छपे 'संपादक के नाम पत्र' की प्रति अपने पूर्ण पते के साथ मातृवन्दना संस्थान कार्यालय, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को 31 मार्च 2020 तक भेजें।

सीख लो कुछ चीन से भी रोक लो आबादी

... – भूमिदत्त शर्मा

आबादी योग गुरू बाबा रामदेव ने देश में बढ़ती आबादी और उसे रोकने का मसला उठाकर एक महत्वपूर्ण बहस शुरू की है। लेकिन दुर्भाग्य है कि बाबा रामदेव की इस राष्ट्रीय चिंता की असदुद्दीन ओवैसी खिल्ली उड़ा रहे हैं। पर जनसंख्या विस्फोट को रोकना होगा। मोदी सरकार को कठोर कदम उठाने ही होंगे। 17वीं लोकसभा चुनाव की सारी प्रक्रिया अब पूरी हो चुकी है और केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार एनडीए ने अपना कामकाज फिर से शुरू कर दिया है। यूं तो इस सरकार को देश हित में बहुत से अहम निर्णय लेने हैं, यदि सरकार देश में आबादी को रोकने के लिए भी कोई ठोस नीति लेकर आए तो इसका चौतरफा स्वागत ही होगा। अब इस मसले पर अविलंब निर्णय लेने की आवश्यकता है। वैसे ही हमने अपनी आबादी को कम या काबू में करने में बहुत देरी कर दी है।

इस बीच, योग गुरू बाबा रामदेव ने देश में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून लाए जाने का पक्ष लेते हुए हाल ही में कहा कि दो बच्चों के बाद पैदा होने वाले बच्चे को मताधिकार, चुनाव लड़ने के अधिकार और अन्य सरकारी सुविधाओं से वंचित कर दिया जाना चाहिए। बाबा रामदेव ने देश के सामने उस मसले के हल को पेश किया जिससे देश जूझ रहा है। दरअसल बढ़ती हुई आबादी देश को दीमक की तरह से चाट रही है। बढ़ती आबादी को विकास का पूरा लाभ कोई भी सरकार कैसे दे सकती है। हमारी सारी विकास परियोजनाओं की सफलता के रास्ते में सदैव आबादी एक बड़े अवरोध के रूप में खड़ी हो जाती है।

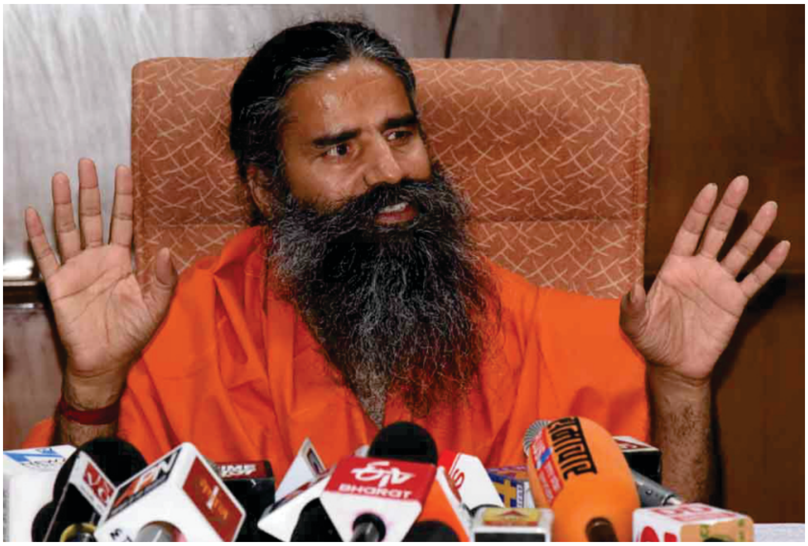

बेरोजगारी, अशिक्षा और अपराध का सीधा संबंध तेजी से बढ़ती आबादी से है। देखा जाए तो हमारे लिए अपनी जनसंख्या का प्रबंधन करना अब असंभव सा हो चुका है। बेरोजगारी का आलम यह है कि तीन-चार हजार रूपये मासिक पर भी पढ़े-लिखे शिक्षित नौजवान पढ़ाने को तैयार हो जाते हैं। इंजीनियर को 15 हजार मिल जायें तो गनीमत है। मजदूर और किसान अमानवीय स्थितियों में जीने के लिए मजबूर हैं। इसे ही सस्ता श्रम कहकर विदेशी पूंजीनिवेश को आमंत्रित किया जाता है। बालश्रम अमानवीयता की हद तक स्वीकृत है। गांवो में अशिक्षा और निरक्षरता की स्थिति भयावह है। भारत में 2011 में जनगणना हुई थी। उसी समय भारत की आबादी 1.20 करोड़ से अधिक हो चुकी थी। हम चीन के बाद दूसरे स्थान पर थे, पर अगर हमने तुरंत कठोर कदम नहीं उठाए तो हम 2025 तक चीन को भी मात दे चुके होंगे। भारत के साथ एक बड़ी दिक्कत यह भी है कि हमारे देश के असम और पश्चिम बंगाल जैसे कुछ सूबों में हर साल लाखों बांग्लादेशी अवैध रूप से घुस जाते है। भारत की बांग्लादेश से चार हजार कि.मी. से लंबी सीमा लगती है। एक अनुमान के मुताबिक, भारत में तीन-चार करोड़ बांग्लादेशी नागरिक अब बस चुके हैं। ये देश के हर शहर में छोटा-मोटा काम करते हुए देखे जा सकते हैं। दरअसल अब देश को अपनी आबादी पर नियंत्रण करने के लिए एक व्यापक नीति बनानी ही होगी। इस मसले को राजनीति और धार्मिक आस्थाओं से उपर हटकर देखना ही उचित होगा। सबको याद रख लेना होगा कि देश बचेगा तो धर्म और राजनीति बचेगी।◆◆◆

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

एक राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ति के लिये आशा लगाये बैठा था, पर पुत्र नहीं हुआ।

उसके सलाहकारों ने तांत्रिकों से सहयोग की बात बताई। सुझाव मिला कि किसी बच्चे की बलि दे दी जाये तो पुत्र प्राप्ति हो जाएगी। राजा ने राज्य में ये बात फैलाई कि जो अपना बच्चा देगा उसे बहुत सारे धन दिये जाएंगे।

एक परिवार में कई बच्चे थे, गरीबी भी थी, एक ऐसा बच्चा भी था जो ईश्वर पर आस्था रखता था, तथा सन्तों के संग सत्संग में ज्यादा समय देता था।

परिवार को लगा कि इसे राजा को दे दिया जाये, क्योंकि ये कुछ काम भी नहीं करता है, हमारे किसी काम का भी नहीं। इससे राजा प्रसन्न होकर बहुत सारा धन देगा। ऐसा ही किया गया बच्चा राजा को दे दिया गया। राजा के तांत्रिकों द्वारा बच्चे की बलि की तैयारी हो गई, राजा को भी बुलाया गया, बच्चे से पूछा गया कि तुम्हारी आखरी इच्छा क्या है?

क्योंकि आज तुम्हारें जीवन का अन्तिम दिन है। बच्चे ने कहा कि ठीक है मेरे लिये रेत मगा दिया जाये, रेत आ गया। बच्चे ने रेत से चार ढेर बनाये, एक-एक करके तीन रेत के ढेर को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया और कहा कि अब जो करना है करे।

ये सब देखकर तांत्रिक डर गये बोले कि ये तुमने क्या किया है पहले बताओ। राजा ने भी पूछा तो बच्चे ने कहा कि पहली ढेरी मेरे माता पिता की है, मेरी रक्षा करना उनका कर्तब्य था पर उन्होने पैसे के लिये मुझे बेच दिया। इसलिये मैने ये ढेरी तोड़ी, दूसरा मेरे सगे-सम्बन्धियों का था, उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नही समझाया तीसरा आपका है राजा क्योंकि राज्य के सभी इंसानों की रक्षा करना राजा का ही काम होता है पर राजा ही मेरी बलि देना चाह रहा है तो ये ढ़ेरी भी मैने तोड़ दी। अब सिर्फ मेरे गुरु और ईश्वर पर मुझे भरोसा है इसलिये ये एक ढेरी मैने छोड़ दी है। राजा ने सोचा कि पता नही बच्चे की बलि के बाद भी पुत्र प्राप्त हो या न हो, क्यों ना इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना ले, इतना समझदार और ईश्वर भक्त बच्चा है। इससे अच्छा बच्चा कहां मिलेगा? राजा ने उस बच्चे को अपना बेटा बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया।

बोधः

जो ईश्वर और गुरु पर यकीन रखते हैं, उनका बाल भी बांका नहीं होता है, हर मुश्किल में एक का ही जो आसरा लेते हैं, उनका कही से किसी प्रकार का कोई अहित नहीं होता है। ◆◆◆

परिस्थितियों का कैसा गुमान ?

एक बार कागज का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ा और पर्वत के शिखर पर जा पहुँचा। पर्वत ने उसका आत्मीय स्वागत किया और कहा-भाई! यहाँ कैसे पधारे ?

कागज.ने कहा-अपने दम पर।जैसे ही कागज ने अकड़ कर कहा अपने दम पर. और तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और कागज को उड़ा ले गया।अगले ही पल वह कागज नाली में गिरकर गल-सड़ गया।जो दशा एक कागज की है वही दशा हमारी है।

पुण्य की अनुकूल वायु का वेग.आता है तो हमें शिखर पर पहुँचा देता है और पाप का झोंका आता है तो रसातल पर पहुँचा देता है।

किसका मान ? किसका गुमान ? सन्त कहते हैं कि जीवन की सच्चाई को समझो।संसार के सारे संयोग हमारे अधीन नही हैं।कर्म के अधीन हैं और कर्म कब कैसी करवट बदल ले , कोइ भरोसा नही। इसलिए कर्मों के अधीन परिस्थितियों का. कैसा गुमान ? ◆◆◆

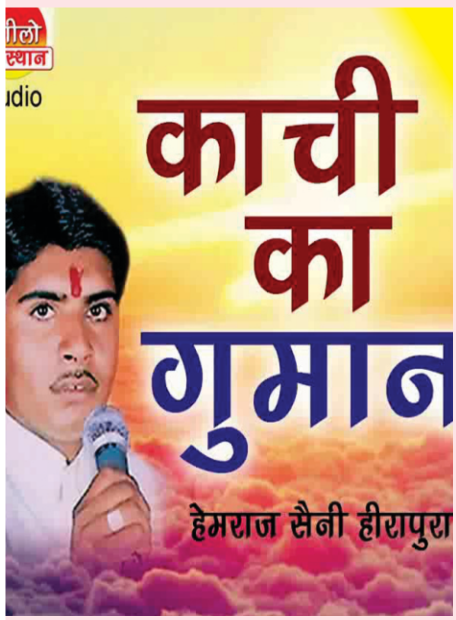

प्रश्नोत्तरी

1. कौन भारत का प्रमुख चाय उत्पादक राज्य है?
2. क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में भारत का स्थान कौन सा है?
3. खुदाई खिदमतगार की स्थापना किसने की?
4. चन्द्रमा की सतह पर उतरने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था?
5. चारमीनार कहाँ स्थित है?
6. जापान की राजधानी टोक्यो को किस उपनाम से जाना जाता है?
7. जिम कार्बेट नेशनल पार्क कहाँ स्थित है?
8. दल बदल कानून कब पारित हुआ?
9. दादा साहब फाल्के पुरष्कार से सम्मानित प्रथम कलाकार कौन थे?
10. दिल्ली से पहले भारत की राजधानी कहाँ थी?
11. नेशनल डिफेन्स अकादमी कहाँ है?
12. भांखड़ा नांगल बॉध किस राज्य में है?
13. भारत का 29वां राज्य कौन सा है?
14. हिमाचल प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश कौन हैं?
15. भारत के केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री कौन है?

पहेली

1. एक आदमी रास्ते में जा रहा था और अचानक बारिश शुरू हो गई वो आदमी पूरी तरह से भीग गया था मगर उसके सिर का एक बाल भी नही भीगा, बताइये क्यों खास बात तो ये है कि उसने अपने सर पे हैट था ऐसी कोइ चीज नही पहनी थी जिससे उसका सिर ना भीगे।
2. ऐसी कौन सी टेबल है जिसके पैर नही होते हैं।
3. ऐसी कौन सी चीज है जो कितनी भी चले मगर कभी थकती नहीं।
4. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम खाते हैं लेकिन उसे हम देख नही सकते है।
5. ऐसी कौन सी चीज है जिसे बिना किसी भी लड़के के शादी नहीं हो सकती।
6. वो कौन है जिसका पेट फूला हुआ है मगर वो दवाई नहीं खाता और दिन रात बिस्तर पर ही लेटा हुआ रहता है।
7. वो कौन सी चीज़ है जो पानी पी कर मर जाती है।

गंजा, टाईम टेबल, जीभ, कसम, लड़की, तकिया, प्यास

चुटकुले

अध्यापक – ईश्वर ने आंखें किसलिए बनाई हैं ?
छात्र – जी, देखने के लिए।
अध्यापक – और कान?
छात्र – जी, मुर्गा बनने के लिए।

चिंटू- आराम से बैठा था।
मिंटू (चिंटू से)- कुछ काम करो।
(चिंटू मिंटू से)- मैं गर्मियों में काम नहीं करता हूं।
मिटू- और सर्दियों में?
चिंटू- गर्मियों आने का इंतजार!

राहगीर – तुम भीख क्यो मांगते है। यह बुरा काम है।
भिखारी – क्या आपने भीख मांगी है ?
राहगीर – नहीं।
भिखारी – फिर यह बताइये कि आपको कैसे मालूम हुआ कि यह बुरा काम है।

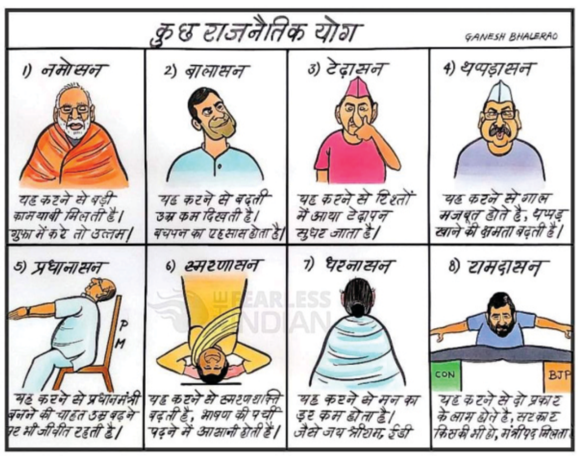

अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत की राष्ट्रीय साधारण सभा सोलन में मंच पर उपस्थित वरिष्ठ कार्यकर्ता व देश भर से आए हुए प्रतिनिधि

घुमारवीं में अतंर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों को योग करवाते हुए शिक्षक

आरोग्य भारती द्वारा आयोजित योग दिवस के अवसर पर ऊना के राजकीय महाविद्यालय में प्रदर्शन करते हुए विद्यार्थी व स्थानीय गणमान्य जन

रिवाल्ट कम्पनी की बाज़ार में आई कम ईंधन खपत वाली बाईक

हिमाचल
पंजाब केसरी
PALAMPUR • THURSDAY • 13.6.2019
बलिदान, सच्चाई व निष्पक्षता के गौ

जाति आधारित सामाजिक वर्जनाएं तोड़ने के लिए समाज को संदेश

मंदिर स्थापना के बाद दलित परिवार ने की पहली पूजा

मानपुरा : महाराणा प्रताप कालोनी बद्दी में नवनिर्मित मंदिर में मूर्ति स्थापना के बाद पहली पूजा–अर्चना करता दलित परिवार। (बस्सी)

मानपुरा, 12 जून (बस्सी): भगवान ने सब इंसानों को एक जैसा बनाया है और सबके अंदर एक जैसा ही रक्त प्रवाहित किया है। फिर भी भारतीय समाज में छुआछूत व जातिगत प्रथाएं बदस्तूर जारी हैं। आज भी देश विशेषकर हिमाचल के कुछ जिले ऐसे हैं जहां दलित हिंदुओं के लिए उनके ही मंदिरों में प्रवेश वर्जित है। प्रदेश के बिलासपुर व कुल्लू जिलों में ऐसे मामले सामने भी आ चुके हैं। अब बद्दी के लोगों ने समाज को एक ऐसा संदेश दिया है जिसकी चर्चा काफी हो रही है।

बुधवार को बद्दी के वार्ड नं.–2 महाराणा प्रताप कालोनी में शिव मंदिर में शिवलिंग व शिव परिवार की मूर्ति स्थापना की गई। गांववालों ने सामूहिक निर्णय लिया कि मूर्ति स्थापना के बाद पहली पूजा किसी दलित परिवार से ही करवाई जाएगी ताकि समतामूलक समाज की स्थापना हो सके, वहीं छुआछूत की लकीरें दिल में खींचे हुए लोगों को एक करारा सबक भी मिल सके। मूर्ति स्थापना हो जाने के बाद सबसे पहले विधिवत पूजा–अर्चना करने के लिए बद्दी में सफाई कंपनी में कार्यरत दर्शन सिंह जोकि दलित जाति से संबंध रखते हैं, को बुलाया गया।

दर्शन सिंह मूलत: निसंग जिला करनाल के रहने वाले हैं। वेह यहां पर पत्नी सहित नगरपालिका के ठेकेदार के पास बतौर सफाई कर्मचारी 12 साल से कार्य कर रहे हैं। मूर्ति स्थापना करवाने आए पंडित मूल चंद शास्त्री कुराली वाले व उनके शिष्यों ने दलित परिवार से मंत्रोच्चारण के साथ पहली पूजा–अर्चना करवाई तो वहां बम बम भोले से मंदिर गूंज उठा। आयोजकों ने दर्शन सिंह व उनकी पत्नी के पैर छूकर उनका स्वागत किया। पंडित मूल चंद शास्त्री ने कहा कि प्रभु के बनाए हुए सब बंदे एक हैं और प्रभु किसी में असमानता व भेदभाव नहीं बरतते तो इंसान भेद करने वाला कौन होता है।

मंदिर सबके लिए होते हैं, किसी को रोकना सबसे बड़ा पाप

मंदिर सबके लिए होता है और अगर उसमें किसी को आने से रोका जाता है तो उससे बड़ा पाप कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि हर इंसान में साक्षात प्रभु निवास करता है। पूजा पर बैठे यजमान दीनानाथ कौशल व ठाकुर हंसराज के अलावा मंदिर के संस्थापक परिवार सदस्य माडू राम ने भी भेदभाव को मानसिक बीमारी करार दिया और कहा कि अपने फायदे के लिए हिंदू समाज को तोड़ने वालों को माफ नहीं किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री

श्री जय राम ठाकुर

के कुशल दूरदर्शी नेतृत्व में
प्रदेशवासियों की सुविधा के लिए

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2011

अधिक प्रभावी ढंग से लागू

27 विभागों की 191 सेवाएं समयबद्ध उपलब्ध

13000 अधिकारी नामित, राज्य और ज़िला स्तर पर नोडल अधिकारियों द्वारा निगरानी

24 घंटों के भीतर

- 9459100100 पर SMS के माध्यम से शिकायत पर कार्यवाही
- चरागाह–स्वीकृति (ग्रेज़िंग परमिट)

2 दिन के भीतर
जन्म– मृत्यु और विवाह पंजीकरण

3 दिन के भीतर
विकलांग व्यक्तियों एवं वरिष्ठ नागरिकों को पहचान–पत्र

30 दिनों के भीतर
घरेलू तथा व्यावसायिक पानी का कनेक्शन

अधिनियम का उल्लंघन करने पर
पांच हज़ार रूपये तक के जुर्माने का प्रावधान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
www.himachal.nic.in//ar

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

Designed by **NEW ERA**, Shimla Ph.: 0177-2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on:

Posting Date:
1st & 5th of the Month